नाम (व)रेना डेाठे।. निषर विश्वेहरना नाम पीतानां नाम खाछन. जन्मल् वाम. १ री प्पष्टिव नहस्तानाता नामा पीतानां नाम. खाछन. जन्मल् वानाता राजानाता छ्वाराज्य द्वारा व्यापाता छताराराज्य द्वारा व्यापाता छताराराज्य द्वारा व्यापाता छताराराज्य द्वारा व्यापाता छताराराज्य द्वारा विनाता स्वापाता भ महाभाता भ महाभावा भ महाश्वेवराज्य रातुहम्ण हाशंभी पृथ्वीमाता भ प्राप्ता भ क्षाराज्य रातुहम्ण हाशंभी पृथ्वीमाता भ क्षाराज्य रातुहम्ण हाशंभी पृथ्वीमाता भ क्षाराज्य रातुहम्ण हाशंभी पृथ्वीमाता भ क्षाराज्य रातुहम्ण हाशंभी प्राप्ता स्थावराज्य स्वापाराज्य रातुहम्ण हाशंभी प्राप्ता स्वापाराज्य रातुहम्ण हाशंभी स्वापाराज्य
ર અજીતનાથ વિજયામાતા જીતશતુરાજા હાથી અયાધ્ય ર સંભવનાથ સેનામાતા જીતશતુરાજા હાથી અયાધ્યા ર અભિનંદન સિદ્ધા ર્થા માતા સંવરનાજા વૃદ્ધો વિનાતા મ અલામાતા મુધારાજા દ્વાયપક્ષી કાશલ પદમપ્રભુ શુશીમામ'તા ધરરાજા રાતુકમળ કાશ'ભી પ્રથીમાતા પ્રશ્વીમાતા મુદ્યાયના સાથીઓ વધારસી ર યદ્રપ્રભુ લક્ષ્મ ભુામાતા મુદ્યાવરાજા મુદ્ધાર કાક દી પ્રવિધિનાથ રામામાતા દુઢરથનજા શ્રી'વત્સ મદીલપુર
२ अछतनाथ विजयामाना छतशतुराज हाथी अयोध्य ३ संभवनाथ सेनामाता छतारीराज होडा सावश्यी ४ अभिनंदन सिद्धा श्रीमाता संवरनाज वृद्धी विनीता ५ सम्भतीनाथ मण्यामाता सेवराज है। अपक्षी गृशस ५ पहमप्रसु शुशीमामाता परिशाज साथीका विषारसी ५ स्विधिनाथ सम्भाता मुशीवराज व्यद्भा अद्विधिनाथ नामाना सुशीवराज श्रीवरस महिसपुर
३ संभवनाथ सिनामाता छतारीराक होते। सावश्यी ४ अभिनंदन सिद्धा र्थ भाता संवराक वृद्धा विनाता मिन्ना में भारा में भ
જ અભિનંદન સિહા ર્થ માતા સંવરનાજા વૃદ્દરા વિનાતા મુમતીનાય મુગલામાતા મુધરાજા કાયપક્ષી કાશલ કાશંબી પદમપ્રભુ શુશીમામાતા ધરરાજા રાતુકમળ કાશંબી પૃથ્વીમાતા પ્રતિષ્ટરાજા સાથીઓ વૃદ્ધારસી યુદ્ધામાતા મુશ્રીવરાજા સુધિનાય રામામાતા મુશ્રીવરાજા શ્રીવત્સ મુદ્દાસપુર
પ સુમતીનાથ મ ગલામા તા મિધરાજા કૈાચપક્ષી કાશલ દ પદમદ્રસભુ શુશીમામ'તા ધરરાજા - રાતુકમળ કાશંભી વ્યારસી દ સુધાર્શ્વનાથ પશ્ચીમાતા મહાશેનરાજા ચંદ્રમાં ચદ્રપુરી દ સુવિધિનાથ રામામાતા મુગ્રીવરાજા શ્રીવત્સ મહાસપુર શ્રિતળનાથ નુ દામાતા દુઢરથગજા શ્રીવત્સ મહાસપુર
ક પદમપસ શુશીમામ'તા ધરરાજ રાતુકમળ કાશ'ભી
જ સુપાર્શ્વનાથ પૃ ^ક રીમાતા પ્રતિષ્ટરાજ્ય સાથીઓ વણારસી ૮ ચદ્રપક્ષુ લક્ષ્મ ણામાતા મહારોનરાજ્ય ચદ્રમા ચદ્રપુરી ૯ સુવિધિનાથ રામામાતા મુગ્રીવરાજ્ય મહધર કાકદી ૧૦ શિતળનાથ નુદામાતા દૂઢરથરાજ્ય શ્રીવત્સ મદીલપુર
८ य ६५५ स्विधिनाथ सहभ शाभाता महाशेनरीक य ६५५ य ६५५री सहिविधिनाथ राभाभाता मुश्रीवराक मह्य है। है। सहि सहि सहस्थान श्रीवरस महीस पुर
હ સુવિધિનાથ રામામાતા મુગ્રીવરાજા મહધર કાક દી ૧૦ શિતળનાથ નુદામાતા દૂઢરથગજા શ્રીવત્સ મદાસપુર
૧૦ શિતળનાય નું દામાતા દુઢરથગજા શ્રીવતસ મદીલપુ
૧૨ વ સપુજ્ય જયામાતા ે વસુપુજ્યરાજા પાઢા ચ પાપરી
13 વિમિળનાથ સ્યામામાતા કૃતવમ રાજા સુઅર કૃપીલપ
૧૪ અને તનાથ સુયસામાતા સિ હમેનરાજા સિંચાણા અશાધ્યા
पप विरमनाय सिवृताभाता लातु राज्य विजय राज्यभी
૧૬ શાંતીનાય અચિરામાતા વીશ્વસેનરાજાહરણ હથીનાઉ

સુદરશનરાજાન દાત્રત

બાકડા

કળશ

કાચબા

નવકમલ

શ ખ

સપ્

સિ હ

સુરરાજા

સુમિત્રરાજા

વી જયરાજા

અશ્વસેનરાજા

સિહાર્થ રાજા

પ્રભાવતીમાત કુ ભૂરોજા

ગીવાદેવીમાતા સસુદ્રવીજય

હથીનાઉર

ગજપુરી

નાગપુરી

ામથીસા

મહીલા

સારીપુર

વણારસી

ક્ષત્રિકુંડ

-ાજગીર્સ્ટ

કું યુનાથ

અરતાય

મક્ષીનાય

મુનીસુવત

નમીનાય

નિમનાથ

૨૪ મહાવીરસ્વામ ત્રિમલામાતા

રુ પાર્ધનાથ

શ્રીમાતા

દેવીમાતા

પદમાવતીમા

વિધામાતા

યામામાતા

1৩

26

26

२०

21

२२

॥ श्री जिनाय नमः ॥ –॥ तिर्थाधिराज श्री शत्रुजयगिरि नमः श्रस्तु ॥

॥ स्धारस स्तवन संग्रह ॥

॥ भाग र लो ॥

॥ चैत्यवंदन करवानी विधि॥ इन्नाकारेण संदिसह जगवान् चैत्यवंदन

करं ? इच्छं एम कहीने पठी चैत्यवंदन कहेतुं.

॥ चैत्यवंदन ॥

आज देव अरिहंत नमुं, समहं तोई नाम ॥ ज्यां ज्यां प्रतिमा जीनतणी, त्यां त्यां करंप्रणाम॥

! ॥ शेत्रुंजे श्री छादिदेव, नेम नमुं गिरनार ॥ आरंगे श्री छाजितनाथ, छाबु रिषन्न जुहार ॥१॥ श्रष्टापदगिरि जपरे, जीन चोवीसी जोय ॥

ुणिमय मुरत मानशुं, जरते जरावी सोय ॥३॥

समेतशिखर तिरथ वमो, ज्यां विशे जीनपाय ॥ वैज्ञारगिरिवर उपरे, वीर जीनेश्वरराय ॥ मांमवगढनो राजीयो, नामे देव सुपास रिखव कहे जीन समरतां, पहोंचे मननी आ ॥ ५॥ (पछी)

॥ जंकिंचि॥

ं जंकिंचि नाम तिहां, सग्गे पायालि माणुसेले ए; जाइं जिए विंबाइं, ताइं सबाइं वंदामि॥ ॥ नमुथ्थुणं॥

नमुथ्युणं अरिहंताणं, जगवंताणं, आइगराणे तिज्ञयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिसि हाणं पुरिसवर पुंकरीआणं पुरिसवर गंधहजी लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपुड् वाणं लोगपजोअगराणं, अजयदयाणं, चरकुर याणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं भ

म्मद्याणं धम्मद्वेसियाणं धम्मनायगाणं धम्म-प्तारहीणं धम्मवरचाउरंत चक्कवहीणं अप्प-किह्यवरनाणं दंलणधराणं विश्रहरुजमाणं जि-णाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं चोह्या एं मुत्ताएं मोत्रगाएं स्टवन्नुएं सटवद्रिसीएं सीव मयल मरुख मणंत मरूप महाबाह मुप्-रणराविति सी जिगइ नामधेयं ठाणं संपत्ताणं न मोजीणाणं जिस्रनयाणं जेस सहस्रासिद्धा जे अनिवस्तंतिणा गये काले संपर्अ वहमाणा सब्वे तिविहेण वंदामि॥ (पढ़ी) ॥ जावंती ॥ । जावंति चेइआई उहेअ अहेअ तिरिस्र लोएँ । ख सबाइंताइं वंदे इहसंतो तहसंताइं ॥ (पृत्री) ह ॥ इञ्चामि खमासमणो वंदिजंजावणी जाये

निसीहोश्राए महएए वंदामि॥ (पही)

॥ जावंत केविसाहु ॥

जावंत केविसाहु जरहेरवय महाविदेहेछ, स व्वेसिं तेसिं पण्डं तिविहेण तिदंग विरयाणं॥ नमोऽईत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुन्यः॥ (पछी स्तवन कहेवुं)

॥ ऋषभदेव स्तवन ॥

जगजीवन जग वालहो, मारुदेवीनो नंदला लरे; मुख दीठे सुख उपजे, दरिशन अति आ नंद लालरे ॥ज०॥१॥ आंखमी अंबुज पांखमी अष्टमी शशीसम जाल लालरे; वदन ते सारंद चंदलो, वाणी अतीही रसाल लालरे ।।जनार।। **सक्त्रण अंगे विराजता, अहा**इ सहस उद्धार खालरे; रेखाकर चरणादीके, अन्यंतर नही पार लालरे ॥जणा३॥ इंड चंड रवी गिरीतणा, ग्रण लेइ घमीयुं छांग लालरे; जाग्य कीहांथकी

श्रावीयुं, श्रचरिज एह उत्तंग लालरे ॥ज०॥॥ रगुण सघळा श्रंगी कर्या, दूर कर्या सवी दोष लालरे; वाचकजश विजये शुण्यो, देजो सुलनो पोख लालरे॥ (पर्श वे हाथ जोडी)

॥ जयवीयराय ॥

जयवीयराय जगगुरु हो जममं तुहपन्नावर्ज न-यवंत्रव निव्वेर्त मग्गाणुंसारिया इठफल सिद्धि लोग विरुद्धचार्च गुरुजण पुत्रा परहकरणं च सु इग्रुरुजोगो तव्वयण सेवणा आजवमखंमा॥वारि जइजइ विनिञ्जाण बंधणं वित्रयराय तुइसमए तह विमम हुज्जसेवा नवे नवे तुम्हचलणाणं दुरकरकर् कम्मरकर्र समाहीमरणं च वोहिलानो य संप-जज महए अं तुहनाह पणाम करणेणं सर्वमंगल मांगढ्यं सर्व कख्याण कारणं प्रधानं सर्व धर्मा-णां जैनं जयति शासनं॥ (पछी चभा थइने

॥ अरिहंत चेइआणं ॥

श्रीहंत चेइश्राणं, करेमि काउस्सग्गं वंदणव तिश्राए पूत्रणवित्रश्राए, सक्कारवित्रश्राए, स-म्माणवित्रश्राए, बोहिलाजवित्रश्राए, निरुवस गावित्रश्राए, सद्धाए, मेहाए धीइए धारणाए, श्राणुप्पेहाए वहुमाणीए ठामी काउस्सग्गं॥ (पडी)

॥ अन्नध्थनससीएणं ॥

श्रव्रज्ञज्ञसित्एणं, नीससीएणं, खासीएणं जीएणं, जंजाइएणं, जड्डुएणं, वायनीसग्गेणं जन्मिलीए पितमुज्ञाए सुहुमेहिं श्रंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिंदि हिसंचालेहिं ए-वमाइएहिंश्रागारेहिं श्रद्धां श्रविराहिठं, हुज्जम्मेकाज्स्सग्गो, जावश्ररहताणं जगवंताणं नमुक्कारेणं नपारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणंजाणेणं, श्रद्धाणं वोसिरामि॥(पञ्चीएकनवकारगणीये।यकहेवी)

॥ थोय ॥

श्रादिजीनवर राया, जास सोवन काया; म रुदेवी माया, धोरी लंडन पाया; जग स्थिति निपाया, गुद्ध चारित्र पाया; केवलिसरी राया, मोक्त नगरी सिधाव्या ॥ इति चैत्यवंदन करवानी विधि समाप्त.

॥ भावनाओ ॥

दर्शनं देव देवस्य, दर्शनं पाप नारानं; दर्शनं स्वर्ग सोपानं, दर्शनं सोक्ष साधनं. प्रज दर्शन सुख संपदा, प्रज दर्शन नव नीध; प्रज दर्शनच्यी पामीए, सकळ पदारथ सीध प्रावे जीन-वर पूजीए, जावे दीजे दान; जावे जावना जावीए, जावे केवळकान. जीवमा जोनवर पूजीए, पूज्यानां फळ होय. राज नमे प्रजा नमे, आण न लोपे कोय. वामी चंपो मोरीज, सोवन

पांखकीए; पार्श्व जीनेश्वर्रं पूजीए, पांचे आंग-

ळीए. श्राप्तने वहाली वीजळी, धरतीने वहा-क्षी मेह; राजुल वहाला नेमजी, श्रापने वहालों देह. श्राखी जलेबी पातळी, खूणे बेशी खाय; देव गुरुनी नींदा करे, ते सातमी नरके जाय.

जगत्रयाधार कृपावतारं, दुर्वार संसार वी-

कार वैद्यं; श्रीनीतराग त्वयी मुग्ध जावा, दिइह प्रजावीक पयामीकींचीत्.
देखीरे अदजूत ताहरुं रूप, अचरीजे जवीकारुपी पद वरो; ताहरी गती तुं जाणे हो देव,
समरण जजन ते वाचकजस लहे.

सकळ कर्म वारी, मोक्त मार्गाधीकारी; त्री-जुवन जपगारी, केवळज्ञान धारी. १ जवीजन

॥ मालीनी छंद ॥

(११)

नीत्य शेवो, देव ए जक्ती जावे; इहज जीन जजंतां, सर्व संपत्ती आवे. जीनवर पद शेवा, सर्व संपत्ती दाइ; नीशदीन सुखदाइ, कल्पवस्नी साहाइ. नमी वीनमी खहीजे, सर्व वीद्या व-गाइ; ऋषज जीन शेवा, साधतां तेह पाइ. ॥ प्रजातियां. ॥ पास संखेश्वरा सार कर सेवका, देवका एव-

मी वार लागे;कोमी करजोमी दरबार आगे ख-मा; ठाकुरा चाकुरा मान मागे. प्रगट था पास-जी मेली पमदो परो, मोम असुराणने आप ठो मो; मुज महिराण मंजुसमां पेशीने, खलकना नाथजी बंध खोलो. जगतमां देव जगदीश तुं जागतो, एम शुं आज जिनराज उंधे; मोटा दानेश्वरी तेहने दाखीए, दान दे जेह जग का-ठ मोंधे. जीम पमी जादवा जोर लागी जरा, ततक्तीण त्रीक भे तुज संत्रायों; प्रगट पातालथी यलकमां तें प्रजु, त्रक्तजन तेहनो त्रय निवायों; आदिस्रानि स्रित्वंत तुं एक हे, दिनदयाळ हे कुण दुजो; उदयरतन कहे प्रगट प्रजु पास-जी, पामी त्रवनंजनो एह पुजो.

प्रजाते पंखीमां वोले, रजनी रही थोमी; माता महदेवा कहे जठो, पुत्र आळस मोमी. प्र-न्नातेणार॥देव देवी ताई मुख जोवाने, जना सुर कोमी: वाट जुवे वनीता नगरीमां, दीयो दरीहान दोमी. प्रजाते०॥१॥ सुर इंड सजामां आवे, सुर लोक ठोकी; नाटक कारण कीन्नर आवे, दीग-कुमरी दोडी. प्रजाते०॥३॥ सूरज तो सवारे जगे, निमिर जाळने नोफी: अवसर जाणी चंड जग्यो हे, दीयो दरीहान दोमी. प्रजाते० ॥ ४॥ नाजीनो रेनंदन नाहलो नीहाळी, हरखे सुर कोमी; लक्ष- मीचंद शीष्य राम पर्यंपे, वंदे करजोभी. प्रजाते०५।

सकल कुशल वह्नी पुष्करावर्त मेघो, पुरित तिमिर जानुं कल्पवृद्धोपमानुः जवजल निधि-पोतः सर्व संपत्ति हेतुः, सजवतु सततंवः श्रेय से शांतिनाथः श्रेयसे पार्श्वनाथ.

॥ श्री आदिनाथनुं चैत्यवंदन ॥

श्रादिदेव श्रावेसर, विनितानो राय॥ नाजि राया कुल मंगणो, मारुदेवा माय ॥ पांचसें ध-नुषनी देहनी, प्रजुजी परम दयाल ॥ चोराशी लाख प्रवनुं, जश श्रायु विशाल ॥ वृषज लंढ न जीनवर धरुए, उत्तम गुणमणी खाण ॥ तस पद पद्म सेवनथकी, लहिए श्रविचळ ठाण ॥

॥ श्री शांतिनाथनुं चैत्यबंदन ॥ शांति जिनेश्वर सोळमा, अचिरा सुत बंदो शा विश्वसेन कुळ नजोमणी, जविजन सुख कं-दो ॥ मृग लंढन जिन आउखुए, लाख वरस प्रमाण ॥ इिष्णां नयरी धणी, प्रजुजी गुण मणी खाण ॥ चालीश धनुषनी देहमी, सम-चोरस संठाण ॥ वदन पद्म ज्युं चंदलो, दीठे परम कल्याण ॥ इति ॥

॥ श्री नेमनाथनुं चैत्यवंदन ॥

नेमनाथ बावीशमा, शिवादेवी माय ॥ समु-द्विजय पृथ्वीपति, जे प्रजुना ताय ॥ दश धनु बनी देहकी, आयु वरस हजार ॥ शंख लंबनध र खामीजी, तजी राजुल नार ॥ सौरीपुरी न-यरी जलीए, ब्रह्मचारी जगवान ॥ जीन उत्तम पद पद्मने, नमतां अविचळ थान ॥ ३ ॥ ॥ श्री पार्श्वनाथनुं चैत्यवंदन ॥ आश पुरे प्रजु पासजी, त्रोके जव पास ॥ वामा माता जनमीया, छहिलंबन जास ॥ छह-सेन सुत सुख करुए, नव हाधनी काय। काही देश वणारसी, पुन्ये प्रज आय ॥ एकसी वर-सतुं आजखुं, पाळी पार्श्वकुसार॥ पद्म कहं मुक्ते गया, नमतां सुख निर्धार ॥ ३॥ ॥ श्री महावीरस्वामीतुं चेत्ववंद्न ॥ सिधारण सुत वंदीए, त्रीज्ञलाना जाके कि त्रीकुंनमां अवतयों, सूर नरपित गायो हिन्द पति लंबन पाउले, सात हायनी काय । जहीं-तेर वरसतुं आवखं, बीर जीवका नव न माविजय जीनराजनाए, उन्म क्रू हार्ड सात वोलधी वर्णाल्याः, प्रदूरिकाः विकास ना देहरे जावा मन करे, चोथतणुं फळ पावे ॥

जीन जुहारवा उठतां, ठठ पोते आवे ॥ जइशुं जीनवर जाणीए, मारग चालंता ॥ होवे घाद-शतणुं पुन्य, जक्ति सालंता ॥ अर्थ पंथ जीनव-रतणोए, पंदरे जपवास ॥ दीठो स्वामीतणो जू वन, बहीए एक मास ॥ जीनवर पासे आवंतां व माशी फळ सिद्ध ॥ आव्या जीनवर बारणे वरसी तप फळ लीध ।। सो वरस उपवास पुर न्य, प्रदक्तिणा देतां ॥ सहस वरस जपवास पु-न्य, जे नजरे जोतां ॥ फळ घणो फुलनी मार्ळ, प्रज्ञ कंठे ठवतां ॥ पार न त्यावे गीत नाद के रा फळ स्थुणतां ॥ शिर पुजी पुजा करोए, सूर भूपतणो भूप॥ अक्तत सार ते अक्तय सुख, दीप त-नुं रुप ॥ निरमळ तन मन्ने करीए, स्थुणतां इं-क् जगीश ॥ नाट्यक जावना जावतां, पामे प-

द्वी जगीश ॥ जीनवर जिक्त वळीए, प्रेमे प्र-काशी ॥ सुणी श्री ग्रह वयण सार पूर्व रिषी जाखी ॥ श्रष्ट करमने टाळवा, जीनमंदिर ज-इशुं ॥ जेटी चरण जगवंतना हवे निर्मळ थइ शुं ॥ कीर्तीविजय जवजायनो, विनय कहे कर जोम ॥ सफळ होजो मुज विनति, जीन सेवा नुं कोम ॥ इति ॥

॥ श्री सिद्धाचळनुं चैत्यवंदन ॥

विमळ केवल ज्ञान कमळा, कलित त्रिजूवन हित करं ॥ सूरराज संस्तुतः चरण पंकज ॥ न-मो छादि जीनेश्वरं ॥१॥ विमळ गिरिवर श्रृंग मंगण, प्रवर गुण गण जूदरं ॥ सूर छसूर किन्नर कोिं सेवित ॥ नमो० ॥१॥ करती नाटक कि-न्नरो गण गाय जीनगुण मनहरं ॥ नीर्जरावली नमे छहर्नीश ॥ नमो० ॥ ३ ॥ पुंगरिक गणप-

ित्र सिद्धि साधी कोडी पण मुनी मनइरं॥ श्री विमळगिरीवर श्रृंग सिद्धा ॥ नमो० ॥४॥ निज साध्य साधन सुर मुनोवर कोनी नंतए गिरीव रं, मुग्ति रमणी वर्षा रंगे ॥ नमोर्णा ५॥ पांता क नर सुरलोक मांहे विमळ गिरिवर तोपरं ॥ नहीं अधिक तिर्य तिर्थपति कहे ॥ नमो०॥ द्या इम विमळ गिरवर शिखर मंनण डुःख वि इंमण ध्याइए ॥ निज शुद्ध सत्ता सार्धनाथ, प द्भम ज्योतिनि पाइए॥ जित मोह कोह विठोह विद्या, परम पदस्थित जयकरं ॥ गिरीराज सेवा करण तत्पर, पद्मविजय सुविहितकरं ॥ १॥ इति॥ ॥ श्री पुंडरिक स्वामिनुं ॥

श्रादिश्वर जिनरायनो, गणधर गुणवंत । अगट नाम पुंगरिक जास, महिमाहे महंत ॥ विकोष साथे मुणिंद, श्रणसण तिहां कीध ॥ शुक्तक्यान व्याता अमुख, केवळ तिहां खीघो। चैत्री पुतम दिनेए, पाम्या पद माहानंद ॥ ते दिनथी पुंतरिकगिरी, नाम दान सुखकंद ॥

॥ पर्श्वसणपर्वनुं ॥

प्रण्मूं श्री देवाधिदेव, जीनवर श्री महावीर ॥ सूरनर शेवा शांत दांत, प्रजु शावद धीर ॥ पर्व पर्युसण पुन्यथी, पामी जनि जाणी।। जैने धर्म आराधीए, समकित हित जाणी॥ श्री जीनप्रतिमा पूजीए, कीजे जन्म प्रवित्र ॥ जीव जतन करी सांज्ञळो, प्रवचन वाणी वनित ॥ ३ ॥

॥ इति चैत्यवंदन संपुर्ण ॥

शेत्रुंजयना खमासमण पूर्वक वोलवानाः

॥ दोहराः॥

श्रकेकुं मगढ़ुं जरे, शेत्रुंजा सामुं जेह; रीखव कहे जब कोमनां, कर्म खपावे तेह. १ शेत्रुंजा स-मो तीरथ नही, रीखव समो नहीं देव; गौतम सरीखा गुरु नहीं, वळी वळी वंडु तेह. २ सिद्धा चळ समरं सदा, सोरठ देश मोजरः मनुष्य ज न्म पामी करी, वंदु वार हजार ३ सोरठ देशमां संचर्यों, न चढ्यो गढ गिरनार; शेत्रुंजी नदी ना-ह्यो नहीं, एनो एळे गयो अवतार. ४ शेत्रंजी न-दी नाहीने, मुख बांधी मुख कोश; देव जुगादी पुजीए, आणी मन संतोष. ५ जगमां तीरथ दो-वना, रोत्रुंज्य गिरनार; एक घन रिखव समोसर्या, ्रिएक घम नेमकुमार. ६ सिद्धाचळ सिद्धि वर्या, य-ी मुनि लींग अनंत; आगे अनंता सीधशे, पुजो

ज्ञवी जगवंत. ७ शेत्रुंडय गिरि मंमणो, मारदेवीनो नंद; जुगला धर्म निवारको, नमो युगादि जीणंद. जीन नवछंगी पूजाना दुहा.

अंगुठे-जळ जरी संपुट पत्रमां, युगलीक नर पू-जंत; रिखव चरण अंगुठके, दायक जव-जळ अंत.

ढींचे ए जानुबळे का जसगा रह्या, विचर्या देश-विदेश; खर्मा खर्मा केवळ खह्युं, पूजी जानुं नरेश.

कांमे-लोकांतिक वचने करी, वरदया वरसीदान; करकांमे प्रञ्ज पूजतां, पूजो जवी बहु मान.३

खने-मान गयुं दोय खंशयी, देखी वीर्य खनंत; जूजाबळे जवजळ तर्या, पुजो खंध महंत.४

मस्तके-सिद्धशिह्या ग्रण उजळी. खोकांते जगवंतः विसया तेणे कारण जवी, सिद्ध शीखा कपाळे--तिर्धंकर पद पुन्यथी, त्रिजुवन जन सेवंतः;

पूजंत.

त्रिजुवन तिसक समा प्रज्ञ, ज्ञास तिसक जयवंत. कंठे-सोळ पहोर प्रजु देशना, कंठे विवर वरतुल; मधुर ध्वनी सुरनर सुणे, तिणे गळे तिलक हृदये--हृदयकमळ जपशम बळे,बाळया रागनेरोष हेम दहे वनखंगने, हृदय तिलक संतोष.ण नाजी-रत्नत्रयी गुण उजळी, सकळ सुगुण विसराम ् नाजीकमळनी पुजना, करतां श्रविचळ धाम. हाथ जोमीने-जपदेशक नव तत्वना, तिणे नव श्रंग जीएंदः पुजो बहु विध रागशुं कहे शुजवीर मुणिंद. रण

सुधाग्स स्तवन संग्रह.

भाग २ जो.

स्तवन समुदाय.

श्री सिद्धाचळना स्तवनो.

स्तवन १ ख्रं-

चालोने प्रीतमजी प्यारा, शेत्रुंजे जइए; शेत्रुं-े जे जरूए.चालो^० ए स्रांकणी. द्युं संसारे रह्या **ठो** मूंजी, दिन दिन तन ठीजे; आय आजनी छा-या सरखी, पोतानी कीजे. चाखो ।।। रा करवुं ते पेसां कीजे, कासे शी वातो; श्रणचिंतवी श्रां श्रा वी पमरो,सबळानी लातो. चालो०॥१॥ चतुराइद्युं चित्तमां चेती, हाथे ते साथे; मरणतणां निसा-नां मोटां, गाजे हे माथे. चालोगा३॥ माता महदे-वी नंदन नीरखी, जब सफळो कीजे; दानवी जे साहेवनी सेवा, ए सघळी लीजे. चालोगाधाः

स्तवन १ जुं.

सुण सुण शत्रुंज्य गिरि स्वामी, हुं तो अरज करुं शीर नामी ॥ कृपानिधी विनती अवधारों, न्नवसायर पार जतारो ॥ कृपानिधी० ॥१॥ प्रजु मुरत मोहनगारी, निरख्या हरखे नरनारी ॥ जा-छं वारी हुं वार हजारी ॥ कृपानिधी० ॥१॥ हु-वे कीसीय विमासन कीजे, मुज उपर मेहेर धरी जे ॥ दिखरंजन दरिसन दीजे ॥ कृपानिधीव-॥ ३ ॥ ञ्राज सयस मनोरथ फळी ञा, जवजवना पातिक गळीळा ॥ प्रजु जो मूजसे मूख मळीळा ॥ क्रपानिधी० ॥४॥ समर्या संकट टळी जाय, नित नव नव मंगळ थायं॥ मुज आतम पून्य न्न-राय ॥ कृपानिधी० ॥ थ॥ करजोमी विनती की-जे, केशर चंदन चरचीजे ॥ दिन धन्य धन्य तेह गणीजे ॥ क्रपानिधी० ॥ ६ ॥ सेवो स्वामी सदा

सुखदाइ, कमना न रहे घर कांइ॥ वाधे संपत्ति शोने सवाइं॥ कृपानिधो० ॥॥। प्रजु दर्श सर-स खह्यो तोरो, अति हरखीत होवे चित्त मोरो॥ जेम दोठो चंद चकोरो ॥ क्रपानिधो० ॥ ।।। ना निराया कुमर कुळचंदा, नविजन मन नयन आ नंदा ॥ उंखगे सूर असूर दिणंदा ॥ कृपानिधी० ॥ए॥ जयकारी रीखन जोणंदा, प्रह समे धरे परम आनंदा ॥ वंदे श्री जीन ज्रक्ति मुनिंदा ॥ क्रपानिधीण॥ १०॥

स्तवन ३ जुं.

जमह्या मुजने घणी, जीहो जोटुं विमळिगिरी राय; दोइतरा मूज पांखकी, जीहो खळी खळी खाएं पायके ॥ मोइनगारा होराज हका, मारा सां-जळ सुगुणा सुका ॥१॥ शेत्रुंजो शिखर सोहार्ट णो, जीहो धन्य धन्य रायणहरूव; धन्य पगर्ड

जुजी तणां, जीहो दीठमे जांगे जूखके ॥ मोह न० ॥१॥ इणी गिरी श्रावी समोसर्या, जीहो नाज्ञीनंद मखार ॥ पावन की धी वसुंधरा, जीहो पूरव नवाणुं वारके ॥ मोहन० ॥३॥ पुंनरिक मु-नि मूगते गया, जीहो साथे मूनि पंच कोम॥ पुं-मरिक गिरिवर ए थया, जीहो नमो नमो वे कर जोमके ॥ मोइन० ॥४॥ एऐ तिरथे सिध्या घ-ु णा, जीहो साधु अनंती कोक ॥ त्रण जुवनमां जो यतां जीहो नहीं कोइ एहनी जोमके ॥ मोहन ॥५॥ मनवंडित सुख मेळवे, जोहो जपतां ए गिरिराज ॥ डब्य जाव वैरीतणो, जीहो जय जा ये सवी जांजके ॥ मोहनं ॥६॥ वाचक रामवि जय कहे, जीहो नमो नमो तिर्य एह ॥ शिव मंदिरनी श्रेण हे, जीहो एहमां नहि संदेहके॥ ोहनण् ॥ ७॥

स्तवन ४ थुं.

विमलाचल विमला प्राणी, शितल तरु गया ठराणी॥ रस वेधक कंचन खाणी॥ कहे इंड मुणो इंडाणी ॥ सनेही संत ए गिरि शेवो ॥१॥ हारे चौद केत्रमां तिरथ नहीं एवो ॥ सनेही सं तः ॥ खटरी पाळी जहासिए, उठ अठम काया ्कशीए ॥ मोहमह्ननी सामा धशीए, हांरे विम लाचल वेगे वशीए ॥ सनेही० ॥१॥ अन्य **यान** क कर्म जे करीए, ते हेमगिरि हेठा हरीए ॥ पा-वळ प्रदक्षिणा फरीए, हांरे ज्ञवजलथी हेला त-रीये ॥ सनेही० ॥३॥ शीवमंदीर चढवा काजे, सोपाननी पांति विराजे ॥ चढतां समकिति छा-जे, हारे हर जन्य अजन्य ते लाजे ॥ सनेही० ॥४॥ पांनव पमुहा केइ संता, छादिश्वर ध्यान धरंता परमातम जाव जजंता, हारे सिद्धाचख सिद्ध छनंता ॥ सनेही ॥ ।।।। हारे खटमाशी ध्यान धरावे, शुकराजानुं राज निपावे॥ बहिरंतर शत्रु हरावे, हां रे शेत्रुंज्य नाम धरावे ॥ सनेही ।।।।।। प्राणी ध्यान जजो गिरि साचो, तिर्थंकर नाम निकाचो ॥ मोहरायने लागे तमाचो, हां रे शुज्जवीर विमलगिरि जाचो ॥ सनेही ॥ ॥ ॥

स्तवन ५ मुं.

सिद्धाचळ गिरि जेट्यारे धन जाग्य हमारां॥
ए गिरिवरनो महिमा मोटो॥ कहेतां न आवे पा
रा॥ रायण ऋखज समोसर्या स्वामी, पूरव नवाणु
वारा रे॥ धन०॥१॥ मूळनायक श्री आदिजी
नेश्वर, चौमुख प्रतिमा चारा॥ अष्ट प्रव्यशुं पूजो जावे, समिकत मूल आधारारे॥ धन०॥ १
॥ जाव जगतीशुं प्रज गुण गावे, अपना जनम
पूधारा॥ यात्रा करी जविजन शुज जावे, नर्क ति-

र्थंच गित वारारे ॥ धन० ॥ई॥ इर देशांतरथी हुं श्राव्यो, श्रवणे सुणी गुण तोरा ॥ पितत जुड़ा रण बिरुद तुमारो, ए तिरथ जग सारारे ॥ धन० ॥ ४ ॥ ऋढारसें त्याशी मास श्रषामा, बदी श्रा-वम जोमवारा प्रजुके चरण प्रतापसे संघमां, खीमा रतन प्रजु प्यारारे ॥ धन० ॥ ५ ॥ स्तवन ६ हुं.

श्राज श्राणंद थयो, श्री सिद्धाचल निरली ॥ धन्य दिन आजनो ॥ मारे आंगणे मोतीने मेह बुट्या ॥ मारे कुलदेवा आपे तुट्या ॥ हुंतो रयण चिंतामणी कर पायो ॥ मारे काम कुंन आज घेर श्रायोरे ॥ श्राजण ॥ थ। मारे श्रांगणे कटप पद म फळीयो ॥ मारे पुन्ययोगे जदय वळी छ।। सं-घवी ते मोदी प्रेमचंदे, जेणे संघ चलाव्यो उठरंगे ॥त्राज्ञ ॥१॥ जेले लखी कंकोतरी देशोदेशे ॥ तमे यात्राए आवजो शुन्न वेशे ॥ सो देशदेशना संघ आवे ॥ एतो पुन्य परिवळ घणुं सोहावे रे॥ ष्राजः ॥३॥ केइ व्यवहारीने खटकाळा ॥ केइ उत्तम जीव उहरीवाला॥ केइ शियलवंता ने पाये चाले ॥ केइ सचित्ततणा परिहारा रे ॥श्राज्ञण ध ॥ विजय धर्मसूरीने तपगन्न राया॥ सिन्हकेत्र फरसवाने सहु आव्या ॥ गिरि फरशीने आनंद पाया ॥ मेंतो पुज्या श्री रिषन्नजिणंदना पाया रे ॥ आजण ॥५॥ इण गिरिवरीए अणसण कीधां ॥ केइ उत्तम जीव साधु सिद्धा ॥ केइ उत्तम ए गिरिवर राया ॥ फर्सी कीजे निर्मल काया रे ॥ श्राज् ॥ ६ ॥ संवत श्रहार सामत्रीश वरसे ॥ चैत्र सुद तेरश दिन हरखे॥ संघ त्रगुवारे जलो जरा लीघो ॥ संघ स्वामीवत्सल बहु कीघो रे ॥ श्राज ।।।।। एतो राजनगरना संघमांहि ॥ रथः 🙀 त्रादिक करे जञ्जाही ॥ मांही पटणी संघ सा

ये छावे ॥ गिरि पद्मविजय पुन्ये पावेरे ॥ आज आणंद यंयो ॥ ७ ॥

ंस्तवन ७ मुं.

मारुं मन मोह्यं रे श्री सिद्धाचले रे॥ देखीने हरखीत होय, विधिग्धं की जे रे जात्रा एहनी रे॥ नवनवनां डुःख खोय ॥ मारुं० ॥१॥ पंचमे श्रा रेरे पावन कारणेरे ॥ ए समो तिरथ न कोय॥ मोटो महिमा रे जगमां एहनो रे॥ आ जरते इ ै हां जोय ॥ मारुं० ॥ श॥ इल गिरि छाव्या रे जि नवर गणधरा रे॥ सिध्या साधु अनंत ॥ कठण े करम पण ए गिरि फरसतां रे ॥ होवे करमनी शां ात ॥ मारं ॥३॥ जैनधर्म ते साचो जाणीने रे ॥ मानव तिरथ ए स्थंन ॥ सूरनर किन्नर नृप वि-्र**या**धरारे ॥ करता नाटारंग ॥ मारुं० ॥४॥ धन्य भिन्य दहामोरे धन वेळा घनीरे ॥ धरीए हृदय साख टकानो दहानो रे, लागे मने मीठो रे ॥ स-फळ थयो रे मारा मननो जमायो, वाला मारा जननो संशय जाग्यो रे ॥ नरक त्रिर्यंच गति हुर

(३२)

मोजार ॥ ज्ञान विमलसुरी ग्रण एना घणारे ॥

स्तवन ए मुं.

· श्रांख़नीएरे में श्राज, रोत्रुंजो दीठोरे, सवा·

केहेतां नावे पार ॥ मारुं ॥ ५॥

निवारी, चरणे प्रज्ञजीने लाग्यो रे ॥ शेत्रुंजो दीठोरे ॥ १ ॥ मानव ज्ञवनो लाहो लीजे, वाला
मारा देहमी पावन कीजेरे ॥ सोना रुपाने फुल
के वधावी, प्रेमे प्रदक्षिण दीजेरे ॥ शेत्रुंजो० ॥
१ ॥ दुधमे पलाळीने केसर घोळी, वाला मारा
श्री आदिश्वर पुज्यारे ॥श्री सिद्धाचळ नयणे जो
ं, पाप मेवासी धुज्या रे ॥ शेत्रुंजो० ॥ ३ ॥

श्री मुख सुधर्मा सुरपति आगे, वाला मारा वी-रजीएंद एम बोलेरे ॥ त्रण जुवनमां तिरथ मोटुं, नहीं कोइ शेत्रंजा तोलेरे॥ शेत्रंजो०॥ ४॥ इंद्र सरिखा ए तिरथनी, वाला मारा चाकरी चित्तमां चाहेरे॥ कायानी तो कासर काढी, सू-रजकुंकमां नाहेरे ॥ शेत्रंजोण ॥ ५ ॥ कांकरे कां करे श्री सिद्धखेत्रे, वाला मारा सांधु अनंता सिध्यारे ॥ ते माटे ए तिरथ मोटुं, उद्घार छ-नंता कीधारे ॥ शेत्रंजा० ॥ ६ ॥ नान्नीराया सुत नजरे जोतां, वांखा मारा मेह श्रमीरस बुठारे ॥ उदयरतन कहे आज मारे पोते, श्री आदेश्वर तुव्यारे ॥ शेत्रंजो दीठोरे ॥ ७ ॥

स्तवन ए मूं.

श्रीरे सिद्धाचळ जेटवा, मुज मन खधिक जमायो ॥ रीखबदेव पुजा करी, खीजे जब त-

शोलाहो ॥ श्रीरे०॥ १॥ मणीमय मुरत श्री री-खवनी, एनीपाये अजीराम ॥ जूवन कराव्यां कनकनां, राख्यां ज्ञरते नाम ॥ श्रीरेण ॥ १ ॥ नेम विना तेवीरा प्रजू, आव्या सिद्धक्तेत्र जाणी॥ द्योत्रंजा समो तीरथ नहीं बोख्या श्रीमंधर वाणी ॥ श्रीरेव ॥ ३ ॥ पुर्व नवाणुं समोसर्या, स्वामी श्री रीखन जीएंद ॥ राम पांमव म्रगते गया, षाम्या परमानंद ॥ श्रीरेण ॥ ध ॥ पुरव पुन्य प-साजले, पुंमरीक गिरि पायो, कांतीविजय हरखे करी, श्री सिद्धाचळ गायो ॥ श्रीरे० ॥ ५ ॥

स्तवन १० मूं.

जात्रा नवाणुं करीए विमलिगिरि जात्रा न-वाणुं करीए ॥ १ ॥ सहस कोमी जन पातिक तुटे, रोत्रंजा सामो मग जरीए ॥ वि०॥ जा०॥ ॥ पुरव नवाणुं वार रोत्रंजागिरि, ऋषजजीणंद समोसरीए ॥ वि० ॥ जा० ॥ ३ ॥ पुंमरीक पद जवीए मन हरखे अध्यवसाय शुज धरीए॥ विव ॥ जा० ॥ ४ ॥ सात वह दोय अवम तपस्या, करी चढीए गिरिवरीए ॥ वि० ॥ जा० ॥ य ॥ पिकक्रमणां दोय विधिशुं करीए, पापपमळ परी हरीए ॥ त्रि० ॥ जा० ॥ ६ ॥ त्रुमि संथारो ना-रीतणो संग, दुरयकी परहरीए॥ वि०॥ जा०॥ एकल आहारीने सचित्त परिहारी, गुरु साथे पद चरीए ॥ वि० ॥ जा० ॥ ७ ॥ कलिकाले ए ती-रथ महोटुं प्रवहण जेस न्नरदरीए विव ॥ जाव ॥ ए ॥ उत्तम ए गिरिवर सेवंता, पद्म कहे जव तरीए ॥ विमलगिरि जात्रा नवाणुं करीए ॥१०॥

स्तवन ११ मुं.

करजोमी कहे कामनी खखना, खखहो प्रीत-मजी श्रवधार ॥ ए गिरि वाह रे खखना॥ सफळ

करो लइ आपणो ल०, ललहो मानवनो अवता-र ॥ ए गिरिण ॥ १ ॥ नवलख टीको द्युं करो खण लबहो सजवामा जोमाव ॥ ए गिरि०॥ सुनंदा नो नाहलो ल०, ललहो त्रिज्ञवन तिलक नेटाव ॥ ए गिरि० ॥ श। अजितसेनादिक जिनवर ल०, खबहो मुक्ति गया इण ठाम ॥ ए गिरि०॥ जी-न तनुं फरशी जूमिका ख०, खबहो सिद्ध अनंत नुं गम ॥ ए गिरि० ॥३॥ इण चोवीशी सिद्धाच से ल०, खलहो नेम विना त्रेवीश ॥ ए गिरि०॥ जावि चोवीशी आवशे ल०, खलहो पद्मनाजादि जगीश ॥ ए गिरि० ॥ ४ ॥ आदि जिएंद स-मोसर्या लण, खलहो पूर्व नवाणुं वार ॥ ए गिरि० ा। चोमासु अजित जिनेश्वरु ल०, ललहो शांति चोमासु सार ॥ ए गिरि० ॥ ए॥ पंच क्रोम परि-। रुं ख॰, खबहो रिषन्नसेना पुंमरिक ॥ ए गि-

रि०॥ चैत्र पूनम शिव संपदा छ०, लखहो पा-मी थया निरन्निक ॥ ए गिरि० ॥ ६॥ कॉर्त्तिक पूनमे कामित वर्या ल०, खलहो जाविम वारि-खील्य दोय ॥ ए गिरि० ॥ दशक्रोम मुनि महं तसु ल॰, ललहो प्रणमी पातिक धोय ॥ एँ गि-रि॰ ॥ ॥ नमी विनमी विद्याधरा ल॰, खलहो वे को नी सुनि संघात ॥ ए गिरिव ॥ फागण सुद दशमी दिने ल०, ललहो कीथो कर्मनो घात ॥ ए गिरी ।। ए ॥ रिषम् वंशी नृपति घणा ल०, ललहो जरत श्रंगज केइ पाट ॥ ए गिरी०॥ सि-स्राचल श्रेणे चमया ल० ललहो रोप्या धर्मना घाट ॥ ए गिरी० ॥ ए ॥ नारद एकाणुं लाखशुं खि, खबहो राम जरत त्रण क्रोम ॥ ए गिरी ॥ वीश कोमशुं पांमवा ल०, ललहो देवकी सुत खट जोम ॥ ए गिरीण ॥ १० ॥ हरीनंदन होग

(३८) वंदीए ल०, खलहो सांव प्रयुक्त कुमार॥ ए ं गिरी० ॥ कोमी सामी आठ साथे थया लण, लल हो शीवसुंदरी जरचार ॥ ए गिरी० ॥११॥ चाव चा सुत संजमी लण, खबहो सहस शुं अणसण लीध ॥ ए गिरी० ॥ नसी शिष्य नंदिखेणजी ला, ललहो अजितशांति स्तवन कीथ॥ ए गि-री० ॥ १२ ॥ सुवृतरोठ मुणींदशुं ल० ललहो शु क परिव्राजक सिध ॥ ए गिरीण ॥ पंचसया से-लिंग सूरि ल॰, ललहो मंककस्नी सुप्रसिध॥ ए

गिरी० ॥१३॥ सिद्धाचल विमलगिरी ल०, लख-हो मुक्ति निलय शिव ग्राम ॥ ए गिरी ॥ शेत्रं जा आदि जेहनां ल०, ललहो उत्तम एकवीश नाम ॥ ए गिरी० ॥ १४ ॥ जनसागर तरीए जेले ल॰, ललहो तिरथ तेह कहेवाय ॥ ए गिरी॰ ॥

्कारण सकल सफल होवे ल०, ललहो आतम-

(१९) विरज सोंहाय ॥ ए गिरीण ॥१५॥ तिरथ स्थंज

ए जैननो ल०, ललहो शीवमंदिर सोपान ॥ ए गिरी ॥ क्रीमाविजय गुरुषी सहो सक् लखहो सेवक जीन धरे ध्यान ॥ ए गिरी० ॥ १६॥ स्तवन ११ मुं. सुण जीनवर शेत्रंजा धणीजी, दास तणी अ-रदास ॥ तुज आगळ बालक परेजी, हुं तो करं श्रदाशरे ॥ जीनजी मुज पापीने तार॥ तुंतो क-रुणारस जयोंजी, तुं सहुनो हितकाररे जीनजी ॥ मुज० ॥१॥ हुं अवगुणनो उरमोजी, गुण तो नही सवलेश ॥ परगुण पेखी नवि शकुंजी, केम संसार तरेशरे जीनजी ॥ मुजण॥ १ ॥ जी वतणा वध में कर्याजी, बोल्यो मृषावाद ॥ क-, पट करी परधन हर्यांजी, सेव्या विषय संवादरे जीनजी ॥ मुज० ॥ ३ ॥ हुं खंपट हुं लाखची-

वंदीए ल०, खलहो सांव प्रयुक्त कुमार॥ ए ं गिरी ॥ कोमी सामी आठ साथे थया लण, लल हो शीवसुंदरी जरधार ॥ ए गिरी० ॥११॥ थाव चा सुत संजमी लण, ववहो सहस शुं अणसण लीध ॥ ए गिरी० ॥ नसी शिष्य नंदिखेएजी खo, खखहो अजितशांति स्तवन कीध॥ ए गि-री० ॥ १२ ॥ सुवृतशेठ मुणींदशुं ल० ललहो शु क परिवाजक सिध ॥ ए गिरीण ॥ पंचसया से-लिंग सूरि ल॰, ललहो मंनकमुनी सुप्रसिध॥ ए गिरी ।। १३।। सिद्धाचल विमलगिरी ला, लख-हो मुक्ति निलय शिव गम ॥ ए गिरी ॥ शेत्रं जा आदि जेहनां ल०, ललहो उत्तम एकवीश नाम ॥ ए गिरी० ॥ १४ ॥ जनसागर तरीए जेले ल॰, ललहो तिरथ तेह कहेवाय ॥ ए गिरी॰ ॥ कारण सकल सफल होवे ल०, ललहो आतम-

्(१९) - जिलीत ॥२२॥ जिल्हा

विरज सोंहाय ॥ ए गिरी० ॥१५॥ तिरथ स्थंन ए जैननो ल०, ललहो शीवमंदिर सोपान ॥ ए गिरी० ॥ कीमाविजय गुरुथी लहो ल०, ललहो सेवक जीन धरे ध्यान ॥ ए गिरी० ॥१६॥

स्तवन ११ मुं.

सुण जीनवर रोत्रंजा धणीजी, दास तणी अ-रदास ॥ तुज आगळ बालक परेजी, हूं तो करुं श्रदाशरे ॥ जीनजी मुज पापीने तारे॥ तुंतो क-रुणारस न्नर्योजी, तुं सहुनो हितकाररे जीनजी ॥ मुजण ॥१॥ हुं अवगुणनो र्चरमोजी, गुण तो नहीं खबलेश ॥ परगुण पेखी निव शकुंजी, केम संसार तरेशरे जीनजी ॥ मुजण॥ १ ॥ जी वतणा वध में कर्याजी, वोख्यो मृषावाद ॥ क-पट करी परधन हर्यांजी, सेव्या विषय संवादरे जीनजी ॥ मुज० ॥ ३ ॥ हुं लंपट हुं लालची-

जी, कर्म कीधां केइ क्रोम ॥ त्रण जुवनमां को नहींजी, जे आवे मुज जोमरे जीनजी ॥ मुज ॥ ४॥ विद्र परायां अहनीशेजी, जोतो रहु जग नाथ ॥ कुगति तणी करणी करीजी, जोड्यो ते इशुं साथरे जीनजी ॥ मुज०॥ ५॥ कुमति कु-टील कदायहीजी, वांकी गति मति मुज ॥ वां-की करणी महारोजी, शी संत्रलावुं तुंजरे जी-नजी ॥ मुज० ॥ ६ ॥ पुन्य विना मुज प्राणि व जी जाणे में झुरे आय ॥ ऊंचा तरुवर मोरीया जी, त्यांही पसारे हाथरे जीनजी ॥ मुज० ॥॥ वीण खाधा वीण जोगव्याजी, फोगट कर्म बं-धाय ॥ आर्तध्यान मीटे नहींजी, कीजे कवण[े] जुपायरे जीनजी ॥ मुज्जा ॥ ए॥ काजळथी पण शामलाजी, मारा मन परिणाम ॥ सोणा मांही हरंजी, संनारं नही नामरे जीनजी ॥मुज०॥

(४१) ए॥ मुग्ध लोक ठगवा जणीजी, करं अनेक प्र-पंच ॥ कुम कपट हुं के ज़वीज़ी, पाप तणो करूं संचरे जीनजी ॥ मुज०॥ राज्या मन चंचल न रहे कीमेजी, राचे रमणीरे रूप ॥ काम विटंबण शी कहुंजी, पमीश हुं छुर्गति कुपरे जीनजी ॥ मुज्ञ ॥ ११ ॥ किस्या कहुं ग्रेण माहराजी, की-स्या कहुं अपवाद ॥ जेम जेम संनाहं हैयेजी, तेम तेम वाधे विषवादरे जीनजी ॥ मुज्र ॥ १२ ॥ गिरुत्राते निव लेखवेजी, निग्रण सेवकनी वा-त ॥ निचतणे पण मंदिरेजी, चंद्र न टाले ज्यो तरे जीनजी ॥ मुज० ॥१३॥ निग्रणो तोपण ता हरोजी, नाम धराव्युं दास ॥ कृपा करी संज्ञा-रजोजी, पुरजो मुज मन श्राहारे जीनजी ॥ मुज॰ ॥ १४ ॥ पापी जाणी मुज न्नणीजी, मत मूको विसार ॥ विख इसाइस आदरोजी, इश्वर

न तजे तासरे जीनजी॥ मुज०॥१५॥ उत्तम गुण कारी हुएजी, स्वार्थ विना सुजाए ॥ करसण सिंचे सरत्ररेजी, मेह न मागे दानरे जीनजी ॥ मुजणारद्या तुं जपगारी गुण निलोजी, तुं शेव क प्रतिपाळ ॥ तुं समरथ सुख पूरवाजी, कर माहारी संजाळरे जीनजी ॥मुज०॥ १९॥ तुंज ने शुं कहीए घणुंजी, तुं सो वाते जाए ॥ मुज ने थाजो साहिबाजी, जन जन ताहरी आणरे जीनजी ॥ सुजण ॥१७॥ नाजिराया कुल चंदलो जी, मारुदेवीना नंद या कहे जीन हरख निवार ज्योजी, देजो परमानंदरे जीनजी ॥मुज्जा१ए॥

स्तवन १३ मुं. निखुमी रायण तरुतळे, सुण सुंदरी ॥ पीछु-

मा प्रजाना पायरे ॥ गुणमंजरी ॥ जन्त्रल ध्याने २ ॥ सुण्ण ॥ एहीज मुक्ति जपायरे ॥

(83) गुण् ॥ शितळ गंयाए बेशीए ॥ सुण् ॥ रा-तको करी मन रंगरे ॥ गुण्ण ॥ पुजीएं सोवन फुलमे ॥ सुण्व ॥ जेम होय पावन छंगरे ॥ गुण्ण ॥ खीर फरे जेह उपरे ॥ सुण्ण ॥ नेह ध-रीने एहरे ॥ गुण् त्रीजे जवे ते शीव लहे ॥ सुण ॥ थाये निरमल देहरे ॥ गुण ॥ प्रीत धरी प्रदक्षिणा ।।सुण्या दीए एहने जे साररे ॥ गुण्ण ॥ अनंग प्रीति होय जेहने ॥ सुण्ण ॥

त्रव त्रव तुम आधाररे ॥ग्रणण। कुसुमफळ पत्र

मंजरे ॥ सुण्० ॥ शीखा थमने मूळरे ॥ गुण्०॥ देवो तणा वासाय है॥ सुण्०॥ तिर्थने अनुकु

ळरे ॥गुण्णा ज्ञानविमल गुण्जाखियो ॥सुण्ण ॥ शेत्रुंजा माहात्म्य मांहरे ॥ गुण्णा

स्तवन १४ मुं.

एक दिन पुंमरिक गणधकरे लाल, पूर्वेश्री

श्चादी जीणंद सुखकारीरे ॥ कद्दीए ते जवजळ जतरीरे लाल, पामीश परमानंद नववारीरे॥ एक ।। १ ॥ कहे जीन इणि गिरि पामशोरे साल, ज्ञान अने निरवाण जयकारीये ॥ तिरथ महिमा वाधशेरे लाल, अधिक अधिक मंगाण ीनरधारी रे ॥ एक**० ॥ २ ॥ इम निसु**णीने तिहां श्रावीयारे खाल, घातिकरम कर्या पुर तमवारी रे पंचक्रोम मुनि परीवर्यारे लाल, हुआ सिद्धि इ-जुर प्रववारीरे ॥ एक० ॥ ३ ॥ वैत्री पूनम दिन कीजीएरे लाल, पूजा विविध प्रकार दिलधारी रे॥ फळ प्रदक्षिणा काउसगारे लाल, लोगस्स थुइ नम्कार नरनारीरे॥ एक०॥ ४॥ दस वीस तीस चालीस जलारे लाल, पचास पुष्पनी माळ अतिसारीरे ॥ नरनव खाहो खीजीएरे खाख, जेम होय कान विशाळ मनोहारी रे ॥एक०॥५॥

् (४५ <u>)</u> स्तवन १५ <u>स</u>ुं.

सिद्धगिरि मंगन इश सुणो मुज विनती, मा-रुदेवानो नंव ठो शीवरमणि पति; पूरक इष्ट अ-नीष्ट चुरक कमविली, नवनय नंजन रंजन तुजः मूडा जली ॥ अनंत ग्रुणना आधार अनंती सक्ती वर्या, कायिकन्नावे ज्ञान दर्शन चारित्रः धया; अजर अमर निरुपाध स्थान पहोतां जी-हां, चार गतिमांही जमतो मुक्यो मूजने इहां।। कोध लोज मोह मत्सर वश हुं धमधम्यो, पण निज जावमां एक घमी प्रज्ञ निव रम्यो; सार करो इण अवसर प्रजुजी उचित सही, मोह ग-ये जो तारो तो तेहमां अधिक नहीं ॥ पण तुज

दर्शन पामी अनुज्ञव जल्लस्यो, मिथ्या तामस सूर सरिखो तुंहि मिह्यो; जदय हुर्ज प्रज आज जाग्य मुज जागीयां, तुज मुख चंद चकोर

ण मुज लागीयां॥तेहीज जीह्व्या धन्य जेणे तुः गुण स्तव्या, धन धन तेहीज नयण जेणे तुज निरखीया; सूर्ति मनहर पध्न मनऋ ि मोहीर्ज, जाणुं त्रव महा सायर चुलकपणुं लहो ॥ त्रव अटवी सत्तवाह कर्म करि केशरि, जन्म जरा मृति रोग हेद धनवंतिर ॥ ज्ञान रयण रयणायर गुण मणि जुधरा, राग देव कषाय जीती थया जिनवरा ॥ तारक मोह निवारक कष्ट मूज काप ज्यो, नवोदधि पार जतारी मुक्तिपद आपज्यो; कमलविजयजी पंन्यास चरण तस किंकरुं, कहे मोइन तुज ध्यान ज्योज्य हुं धरं ॥ इति ॥

स्तवन १६ मुं.

माता मरुदेवीना नंद, देखी ताहरी मुरती कार्म मारु मन लोजाणंजी. मारु दीख लोजाणंजी, मारु वीख लोजाणंजी, कह-

ग्णानाघर करुणा सागर, काया कंचन वाण; भोरी खंडन पावले, कांइ धनुष पांचसे मान ॥ मा० ॥ १ ॥ त्रीगमे बेशी धर्म कहंता, सुणे परखदा बार; जोजन गामिनी वाणी मीठी, वर-संती जळधार. ॥ मा० ॥ १ ॥ जरवशी रुमी अपवराने, रामा वे मनरंग, पाये नेवर रण्जणे कांइ करती नाटारंग ॥ मा०॥ ३॥ तुही ब्रह्मा तुहि विधाता, तुहिं जगतनो देव; सुरनर की-न्नर वासुदेवा, करता तुज पद सेव. ॥मा**०॥** ४॥ तुही त्राता तुही त्राता तुं जग तारण हार तुज सरीखो निह देव जगतमां अरवमीया आधार मा० ' श्री सीद्धाचळ तीरथ केरो, राजा रूपन जीएंद, ्रेन्टीरती करे माणेक मुनी ताहरी, टाळो जवना ्इ। मा०॥६॥

स्तवन १७ मुं.

श्री सिद्धाचळ जेटीए रे मित्ता, महिमानो न-हीं पार रे; एकागर चित्ता ॥ ए गिरी शेवोने ॥ के बलकाने जाणता हो मित्ता, कही न राके अंश मात्र रे ॥ एका० ॥ ए० ॥ ए गिरी सेवो ध्यानमां हो मित्ता, करी थीर मन वच काय रे ॥एका॥। ए० ॥१॥ रीषन्नजिणंद समोसर्या हो मित्ता, पू-र्व नवाणुं वार रे॥ एका०॥ ए०॥ पंचक्रोकपुंक-रिकजी हो मित्ता, वरीया शिववधु साररे॥ ए-का०॥ ए०॥शा जरत पाटे मुग्ते गया हो मि-त्ता, असंख्यात विख्यात रे ॥एका०॥ए०॥ निम विनमि शिवसुख वर्या हो मित्ता, बे कोभी मनी संगाथ रे ॥ एका० ॥ ए० ॥ ३ ॥ इण्रुस्रिगिरीर जे समोसर्था हो मित्ता, नेम विना क्रिना विश्वीहारे॥ का०॥ ए०॥ एकाणुं लाख नारद रुषि है। हुन्

त्ता, पांनव क्रोन वीशरे॥ एका०॥ ए०॥४॥ सांय प्रद्युन्न दोय वांधवा हो मित्ता, सामी आठ कोमी संगाथ रे ॥ एका० ॥ ए०॥ खट देवकीनं दन थया हो मित्ता, शिवसुंदरी न्नरथाररे॥ ए-का०॥ ए०॥थ॥ यावच्या मुनि सहस्रशुं हो मि-त्ता, पाम्या जवजल पार रे ॥एका०॥ए०॥ पांत्रीश हजार शिववरी हो मित्ता, ते वसुदेवनी नार रे ॥एकाणएणा६॥ एम अनेक मुगते गया हो मित्ता, मुनि गुण मणी खाण रे ॥ एका० ॥ ए०॥ बुद्धि नितीथी सेवता हो मित्ता, एम दरशन जाण रे ॥ एका० ॥ ए० ॥ ७ ॥ इति ॥ स्तवन १७ मुं.

्रां (रिश्वभानी देशी.]

(रिश्वभानी देशी.]

प्रणमो प्रेमे पुंमरिक राजीर्ड ॥ गाजीर्ड ज
मारे एह ॥ सीनागी ॥ जात्रारे जातारे पगे

(44) वो मीवो छानंद पूर रे॥ सम०॥ १॥ छायु वर जीत साते करमनीजी, सागर कोना कोनी हीए रे ॥ स्थिति पढम करणे करी जी, वीर्य श्रपुरव मोघर लीध रे॥ सम०॥ १॥ जुंगल जागी आ द्य कषायनी जी, मिथ्यात्व मोहनी सांकळ साय रे ॥ बार उघाड्यां शमसंवेगनां जी, अनुज्ञव ज्ञव ने बेठो नाथ रे॥ सम०॥३॥ तोरण वांध्युं जीव दयातणुं जी, साथी पुर्या सरधा रूप रे ॥ धुप घटी प्रज गुण अनुमादना जो, धीगुण मंगल अ नुप रे ॥ सम० ॥ ४॥ संवर पाणी श्रंग पखातणे जी केसर चंदन उत्तम ध्यान रे॥ आतम गुण रुची म्रगमद महमहे जी, पंचाचार कुसुम प्रधा-नरे ॥ समण ॥॥॥ जाव पूजाए पावन छातमः जी, पूजो परमेश्वर पुन्य पित्रते ॥ कारण जोगे कारज निपजे जी, क्तमाविजय जिन छागम

रीतरे ॥ समकितद्वार गन्नारे पेसतां जी ॥६॥

(५७) स्तवन १ जुं.

आदिजीनेश्वरे कीयो पारणुं, आ रस सेखर्मी ॥ आदि० ॥ घना एकसोत्राठ सेलनी, रस न-रीया हे नीका ॥ जलट न्नाव श्रेयांस वहोरावे, मांमदिवीत्रा बुकारे ॥ त्रादि० ॥१॥ देव दुंदुन्नि वाज रहीहे सोनेश्वा रीवरखा; वारे मासद्युं की यो पारणो, गइ त्रूख सव तिरखारे ॥ आदि ॥ १ ॥ रिद्धि सिद्धि कार्ज मनोकामना, घर घर मं-गळाचार ॥ दुनियां हर्ख वधामणां सिरे, अखा त्रिज तेहेवाररे ॥व्यादिवाशा संकट काटो विम निवारो, राखो हमारी लाज ॥ वे करजोमी नान्हु केता, रीखन्नदेव माहाराजरे ॥ श्रा रस सेलमी ॥ व्यादि ॥ ४ ॥ इति ॥

स्तवन ३ जुं. प्रथम जिनेश्वर प्रणमीए, जास सुगंधी काय

तुज निरमळी, काया कंचनवान ॥ नहि परस्वेद लगार तारे तुं तेहने, जे धरे ताहरुं ध्यान ॥३॥ राग गयो तुज मन थकी, तेहमां चित्त न कोय॥ रुधिर त्यामिशयी रोग गयो तुज जन्मयी, दुध सहोदर होय ॥ ४॥ श्वासोश्वास कमल समो, तुज लोकोतर वाद ॥ देखे न त्र्याहार निहार च-र्म चक्क धणी, एवा तुंज अवदात ॥ ५ ॥ चार अतिराय मुळची, उंगणीश देवनां कीघ ॥ कर्म खप्याथी अग्यार, चोत्रीश इम छितिशया समे ं वायंगे प्रसिद्ध ॥ ६॥ जीन उत्तम गुण गावतां, गुण आवे निज अंग ॥ पद्मविजय कहे एम स-

॥ कल्पवृक्तपरे तास इंडाणी नयन जे, जूगपेरे

खपटाय ॥१॥ रोग जरोग तुज निव नमे, अमृत

जेवा स्वाद ॥ तेहथी प्रतिहत तेहमांनुं कोइ,

नवि करे जगमां तुमग्जुं वाद ॥ २ ॥ वगर धोई

मय प्रज पाळजो, जेम थाउं अक्तय अनंग ॥ प्रथम जिनेश्वर प्रणमीए ॥ ७॥

स्तवन ४ थुं. रिखन जिएंदा प्रथम जिएंदा, तुम द्रिशन

होय परमाणंदा॥ छहीं नीचे जर तुंम दिदारा, मेहेर करीने करज्यो प्यारा ॥ रिखन्न ॥१॥ छा पणने पुंठे जे वळगा, किमसरे तेहने करता छ-लगा ॥ छात्मा कीधा पण रे के वलगा, मोर पी-

ठपरे नहु उन्नगा। रिखन्न ।। तम पण अठगे यये केम सरशे, निक्त निख्याकार्षि लेशे॥ गग न उमे दुरे पमाइ; दोरी बळे हाथ रही आइ॥

रिपन्न ॥३॥ मूज मनमुं हे चपळ स्वनावे, तो ए खंतरमुहुर्त पस्तावे॥ तुंतो समय समय वदसा ए, एम केम प्रिती निवाहो थाये॥ रिपन्न ॥४॥

ते माटे तुं साहिव माहारे, हुं हुं सेवक जवा

अव ताहारे ॥ एइ संबंधमां महोज्यो खामी, वा चक मान कहे शिर नामी ॥ रिषञ्ज ॥ ५ ॥

स्तवन ५ मुं.

प्रथम जिनेश्वर पुजवा, र्संयर मोरी, श्रंग ज-लट धरी छावहो ॥ केसर चंदन मह महे, सयर मोरी, सुंदर आंगी बनाव हो, सेहेज सबुणो मारो, शीव सुख खीनो मारो ॥ ज्ञाननो नी-नो मारो, देवमां निगनो मारो ॥ साहिबो० श सयर मोरी ज्य ज्य प्रथम जीएंद हो ॥ धन्य मारुदेवा कुखने, स० वारी जाउं वार इ-जार हो॥ स्वर्ग शिरोमणीने तजी, स० जहां ख-हे प्रज् अवतार हो ॥ सेहेजंण ॥शादायक नायक्र जन्मथी, स॰ लाज्यो सूरतर दृंद हो ॥ युगला अर्म निवारणो, सण जे थयो प्रथम नरिंद हो ॥

सेहेजणा३॥ लोक निती सिव शिखवी, स॰ दा

स॰ थाप्यो धर्म प्रवाह हो ॥ सेहेज॰ ॥४॥ संज

म लेइने संचर्या, स० वरस लगे वीण अहार

हो।। शेलमी रस शाहेदीर्ड, स० श्री श्रेयांशने

सुखकार हो ॥ सेहेज ॥ ॥ मोहोटा महंतनी

वांकरी, स॰ निष्फळ कदीए न थाय हो ॥ मुनी

पण निम विनमि कर्या, स० क्रणमां खेचर राय हो ॥ सेहेज ॥६॥ जननिने कीधुं नेटणुं, सब केवळ रत अनुप हो ॥ पहेलां माताजीने मोक ह्यां, स० जोवा शीववहु रुप हो ॥ सेहेज० ॥॥ पुत्र नवाणुं परिवर्या, स० जरतना नंदन आठ हो ॥ अष्ट करम अष्टापदे, स० योग निरुद्धये नृष्ट हो ॥ सेहेज० ॥७॥ तेहना विंव सिद्धाचळे, स० ॥ पूजो ए पावन खंग हो ॥ इतमाविजय जिन निर ं **खतां, स**ण उठळे हर्ख तरंग हो ॥ सेहेज० ॥ए॥

स्तवन ६ हुं.

(साहेव वाहु जिनेश्वर विनवुं.-ए देशी.)

हो तारक रिषन जिनेश्वर तुं मख्यो, प्रत्यक्त पोत समान हो ॥ हो तारक तुजने जेइ अविखं ्बिञ्चा, तेणे बह्यं तुज स्थानहो ॥ तारकण ॥१॥ तारक गुण अनंता ताहरा, कोइ कही न लेशे पार हो ॥ हो तार्क केवळी क्रोम मळे कदी ॥ जाणे न कहे निरधार हो ॥ तारक ।।।।। तारक तुज वंदन पूजन करी, पवित्र करुं निज देह हो ॥ हो तारक तुज गुण स्तवनाए स्तवी॥ जीहृवा करुं अमृत 'लेइड्रो ॥ तारक० ॥३॥ तारक गण-धर मुनीवरे स्तव्यो, स्तव्यो देवनी कोमहो 💵 तारक हुं पण तुजने स्तवुं ॥ ज्ञक्ति करुं नीजगुं ई

तारक हु पण तुजने स्तर्वु ॥ ज्ञिक्त करुं नीजगुं ण होमहो ॥ तारक० ॥४॥ हो तारक मारुदेवी माताने नमुं, रत्न कुक्ती धरनार हो ॥ तारक नाजिराया कुळ चांदलो, सकळ जंतु हितकारहो ॥ तारक०॥५॥ हो तारक सुनंदा सुमंगला त-णा, प्रीतम प्रजु विख्यात हो ॥ तारक श्री पुंक रिक गणधर तणा, पितामह जगगुरु तातहो ॥ तारक०॥६॥ तारक तुज नामे रिद्धि संपजे, वा घे कितीं अपार हो ॥ तारक शिवला सेहेजे मळे॥ सफल याये अवतार हो॥ तारक०॥॥॥

स्तवन ७ मुं.

(राग गोपीचंदनो.)

श्रादेश्वर दादा अरज सुणोने प्रज म्हारी॥ए टेक ॥ नाजिराजको नंदन निरखुं, धरुं श्रहोनि-श्र ध्यानः ग्रंर न धारुं चित्त मही, तुमहीज मुज श्राधाररे ॥ श्रादेश्वर० ॥१॥ तक्त चोराशी मांहे हिंदीयो, जमीर्ग काल श्रवंतः संसार सागर स-ामं पीधो. एण प्यास न बुजी श्रंतरे ॥ श्रा०॥

र ॥ कोध मान मायामां लपट्यो, लोज करे तो फान; मोरी मन वच काया स्थिर न रे'वे, जब जीव होत हेरानरे॥ आ०॥३॥ जब आदिनाथ को दरसन पावुं, तब सुमताको लागे संग; जो-कुमताको पुर करे तो, सुद्धा समकितवंतरे॥ **ख्याणाधी। जब सुमता प्रगटे घट मांही, तब छा**ष्ट करम थाय दुर; निवक जीवने कारणेरे, शीवरम ग्रीरहे इजुररे ॥ आ० ॥ ए ॥ सुरचंद सुत करे बंदगी, लक्कर करे अरदास; अटप बुद्धि है मा-हरी, सुने आपो मुग्तिराजरे ॥ आ० ॥६॥ नानि राजा मरुदेवीका नंदन, जुगला, धर्मनीवार; बेर बेर मोरी एज विनंती, जनसागर पार जताररे ॥ त्रादेश्वरः ॥ ७ ॥

स्तवन ए सुं.

नाजी नरींदनो नंदन वंदीए, माहदेवाजी मा कत मकार ॥ निहं जस लंबन लंबन गत्रपतुं, मे- ख्या मोइ मुहाविकार ॥ क्रेवल कमला विमला तुं वर्यो ॥१॥ इरिहर ब्रह्म पुरंधर ज्ञानथी, ज्ञा-न छनंतु जिनवर राज॥ जगलोचनथी छिधक प्रना नहि, जेम रीखव तारकना समुदाय॥ के-वल ॥ १ ॥ धर्म बनायो रे माया परिहरीए, जब दावानल जपसम नीर ॥ पाप हराया रे काया ध-नुषनी, पंचसया सोवन शरीर ॥ केवलण ॥३॥ शीवसुत जोगी रे शीवसुख छापीए, दासतणी श्ररदास मनाय ॥ मोटा मौन थइने जो रहे, तो केम सेवक कारज याय ॥ केवलण ॥ ४ ॥ पंकज दळ जस बींदु जग सहे, उपमा मोतीनी माहा-राज ॥ सजन संगे जग जस पामीए, कहे शुज सेवक यो शीवराज ॥ केवल० ॥ ५ ॥

स्तवन ए मुं.

(बोस्रो प्यारा ब्रेमी पोपटजी बोल-ए राग.)

(६६)

चालो प्यारा चेतन सिद्धाचळ चालो,
चालो चालो ऋषज्ञजीन वंदो;
वाहालो मारुदेवी माताजीनो लालो,
चालो चालो पापनीकंदो;
प्रज्ञ तारा दर्शननी बलीहारी,
धारी धारी वदन जोडं धारी;
मूर्ति तारी शांत सुधारस क्यारी,
न्यारी न्यारी अकळगती न्यारी.

श्री पार्श्वनाथना स्तवनो.

प्यारो प्यारो रे हो वाला मारा पास जिणंद मुने प्यारो ॥ तारो तारोरे वाला मारा ज्ञवनां

दुखनां वारो ॥ काशीदेश वणारशी नगरी, छ-श्रसेन कुल सोहीएरे ॥ पास जिणंद वामानंद मारा वाला, देखीत जन मन मोहीए ॥ प्यारो० ॥ १ ॥ वप्पन दिग् कुमरी मिली आहे, प्रजुजीने हुलरावेरे: थेइ थेइ नाच करे मारा वाला, इरखे जिन गुण गावे ॥ प्यारो० ॥१॥ कमठ इठ गा-ख्यो प्रजु पार्श्वे, वळत जगार्यो फणी नागरे; दी-र्ज सार नवकार नागकुं, धरणींड पद पायो ॥ प्यारो० ॥३॥ दिक्ता लेइ प्रज्ञ केवल पायो, सम वसरणमें सुद्दायोरे; दीये मधुरी देशना प्रजु, चौ-मुख धर्म सुणायो ॥ प्यारो० ॥४॥ कर्म खपावी शिवपुर जावे. अजरामर पद पावेरे; ज्ञान अमृत रस फरसे मारा वाला, ज्योतिसें ज्योत मिलावे व्यारोव ॥ य ॥

स्तवन. १ जुं.

मोहन मुजरो खेजो राज, तुम सेवामां रेहेशु, गनंदन जगदा वंदन, जेह सुधारस खाणी॥

मुख मटके लोचनके लटके, लोजांणी इंडाणी ॥ मोहन० ॥१॥ जन पटण चीह्र दीशी चारे ग-ति, चोराशी लाख चौटा ॥ क्रोध मान मायाने लोजादिक, चोवटीया यति खोटा ॥ मोहन०॥ श ॥ मिथ्या मेतो कुमति पुरोहित, मदनसेनाने तोरे ॥ लांच लइ लाख लोक संतापे, मोहकंदर्प ने जोर ॥ मोहन० ॥३॥ अनादि निगोदनो वंधी खाणो, तृष्णा तोपे राख्यो ॥ संज्ञा चारे चोकी मेली, वेद नपुंसक वांको ॥ मोहन० ॥४॥ ज्ञव-स्थिति कर्म विवर लइ नाठो, पुन्य उदय पण वाधो ॥ स्थावर विकलेंड्रीपणुं उलंगी, पंचेंड्रीपणुं लाधो ॥ मोहन० ॥५॥ मानवनव आरज कुळ सद्गुरु, विमळ बोध मख्यो मुजने ॥ क्रोधादि-क रिपु शत्रु विणाशी, तेणे उंखखाव्यो तुजने ॥ मोइन ।।६॥ पाटणमांहे परम दयाळु, जगत

विजुपण नेट्या ॥ सतर वाणुं शुन्न परिणामे, कर्म कटीन वल मेटया ॥ मोइन० ॥॥ समिक त गज उपसम श्रंवामी. ज्ञान कटक वल कीधुं ॥ क्रमाविजयजिन चरण रमण सुख, राज पोन्तानुं लीधुं ॥ मोइन० ॥ ७ ॥

स्तवन ३ जुं.

घनघटा जुवनरंग ठाया, नवखंमा पार्श्वजिन पाया ॥ प्रज्ञ कमन इनीकुं इनाया, वीषधर पर जलती काया; दील दया धरीकुं ठोकाया, सेवक मुख मंत्र सुनायाः क्षणमें धरणेंड बनाया ॥ नव र्वंगा० ॥१॥ में उर देवनकुं ध्याया, सब फोकट जनम गुमाया; सुणो वामा राणीका जाया, कुछ परमार्य नहीं पाया; तो फुटा ढोल वजावा ॥ नवलंका० ॥१॥ सुण स्वामी कर जरमायाः में र्ल इस्ते पीतळ पाया; मुज हुवा वहु छःख भा

हमोने नाच नचाया; इश विविध के वहु आया

॥ नवखंगा ॥३॥ गोघा बंदर सुख पाया, जव बहु जपगार कराया; नवखंका नाम धराया, में सुणकर चरणे आया; उद्धार करो महाराया ॥ नवखंमा० ॥४॥ हुवा चतुर मास मुज्ञाया की स कारण अब बेठाया; यो मनवांठीत सुखदा-या, हुं प्रेमे प्रणमुं पाया; सेवकका काज सराया ॥नवखंका० ॥५॥ इश विधी निधी इंदुं कहाया, जला आश्वीन मास सोहाया; दीवाळी दीन जब खाया, में खात्म छानंद पाया; एम वीर-विजय गुण गाया ॥ नवखंषा० ॥ ६ ॥ स्तवन ४ जुं. खावो खावो पासजी मुज मळीया रे, मारा म⁻ नना मनोरथ फळीया ॥त्रावोण। ए आंकणी॥

नना मनोरथ फळीया ॥त्यावोण। ए आंकणी॥ तारी मुरत मोहनगारीरे, सह संघने लागे वे प्या

री रे ॥ तमने मोही रह्या सुर नरनारी ॥ आवोव ॥१॥ श्रव्यवेती मुरत प्रज तारी रे, तारा मुंखना जपर जाजं वारी रे नाग नागणीनी जोम जगारी ॥ आवो० ॥ १॥ धन्न धन्य देवाधी देवा रे, सुन रलोक करे ने सेवा रे॥ अमने आपोने शिवपुर मे वा ॥ श्रावोव ॥३॥ तमे शिवरमणीना रसीया रे, जइ मोक्पुरीमां वसीया रे॥ मारा हृदयकमल मां वसीया ॥ आवो०॥४॥ जे कोइ पासतणा गु-ण गाशे रे, जब जबनां ते पातीक जाशे रे॥ तेनां समिकत निर्मल याशे ॥ आवो०॥५॥ प्रज त्रेवी शमा जिनराया रे, माता वामादेवीना जाया रे॥ श्रमने दरिशन दोने दयाला ॥ श्रावोव ॥ ॥६॥ हुंतो खळी खळी खायुं वुं पाय रे, मारा जरमां ते इरख न माय रे॥ एम माणेक विजय गुण गाय ॥ श्रावो ॥ ७ ॥

पंन्यासजी महाराजा श्री कमळावेजयजीना शिष्य मुनी मोहनविजयजीनां बनावेळां स्तवनोः

स्तवन. ५ मुं.

नेखरे जतारों राजा नरथरी-ए देशी. मन मोहन प्रजु पासजी, सुण जगत आधा

रजी ॥ शरणे आव्यो प्रज ताहरे, मुज दुरित नीवारजी ॥ मन० ॥१॥ विषय कषायना पासमां, जन्यो काल अनंतजी ॥ राग देष महा चोरटा, लुंट्यो धर्मनो पंथजी ॥ मन० ॥ १ ॥ पण कांइ

खुंट्यो धर्मनो पंथजी ॥ सन० ॥ १ ॥ पण कांइ पुरव पुन्यथी, मलीया श्री जिनराजजी ॥ जव-समुद्रमां बुनतां, आलंबन जीम जाजजी ॥ म-न० ॥३॥ कमठे निज अज्ञानथी, उपसर्ग कीधो

बहु जातजी ॥ ध्यानानस प्रगटावीने, कीधो क-र्मनो घातजी ॥ मन० ॥४॥ केवसङ्गानधी देखी- युं, सोकासोक स्वरूपजी ॥ विजयमुक्तिपद जङ् वर्युं, सादी श्रनंत चीदरूपजी ॥ मन० ॥५॥ ते पद पामवा चाहतो, मोहन कमसनो दासजी॥ मनमोहन प्रज माहरी, पूरज्यो मननी श्राद्या-जी ॥ मन मोहन प्रज पासजी ॥ ६ ॥

स्तवन ६ तुं.

शो गित थाशे अमारी उं दीनानाथ, शी गित याशे अमारी॥ इंद्रीने काजे हुं घणुं धायो, कर्म कीधां वहु जारी॥ दी० शी०॥ रा॥ वे वाते मारुं मन खबचायुं, एक कंचन बीजी नारी॥ दी० शी०॥शा देशदेशांतर हुं जमी छाव्यो, नाठा-नी नथी वारी॥ दी० शी०॥३॥ हुं हुं करतां गयो जन्मारो, जिस्त न जाणी तुमारी॥ दी० शी०॥ ४॥ जवसागरमां तारो दास बुमे ठे, श्री पार्श्वनाथ से तारी॥ दी० शी०॥ ५॥ (88) --

स्तवन १ मुं.

नवखंगाजी हो पास मनकुं लोजावी बेठा याप उदास तारे तो अनेक हे ने मारे तो तं एक कामी, क्रोधी देव जोइ काढी नांखी टेक. नवव ॥ १ ॥ कोइ देवी देवतानो जाली जनी हाथ मोढे सांके ओरलीने नाचे राधा लाथ ॥ नव ॥ १ ॥ जटा जुटी शीरधारे वळी चोळे राख, गळे तो गीरजाने राखे जोगीपणुं खाख ॥ नवष ॥ ३ ॥ पीरने फकीर जोया नीरग्रणी देव, काच कणी मणी गणीए, तो खोटी टेव ॥ नव० ॥ ॥ ४ ॥ देव देखी जुठमाने आव्यो हुं हजुर, गुण् आपो आपना तो कांती न्नरपुर ॥ नव० ॥ ५ ॥

॥ श्री शांतिनाथनुं स्तवन ॥

स्तवन १ हुं.

सुण दयानिधी तुज पद पंकज मुज मन मधु

कर सीनो॥ प्रज्ञ श्रविश मातानो जायो, विश्व-सेन उत्तम कुळ आयो; एक जनमां दोय पदवी पायो ॥ सुण दयानिधी० ॥ तुं तो रात्र दिवसः रहे सुख जिनो । सुण्णारा। प्रजु चिक्रजीन पदनोः जोगी, शांति नाम थकी थाय निरोगी; तुज सम श्रवर नहीं दुजो योगी ॥ सुण दयानिधी० ॥ २॥ खट खंमतणो प्रज्ञु तुं लागी, निज आतम रिद्धि तणो रागी; तुम सम अवर नही वेरागी सुण दयानिधी० ॥३॥ वमवीर घया संजम धारी, सहे केवल द्वय कमला सारी; तुम सम अवर नदी उपगारो ॥ सुण दयानिधी० ॥ ४ ॥ प्रजू मेघ रथ जन गुण खाणी, पारेचा उपर करुणा - खाणी: निज शरणे राख्यो सुख खाणी॥ सुण द्या निधीण ॥ए॥ प्रज्ञु कर्म कटक जन जय टाळी, निज व्यातम गुणने अजुव्याळी: प्रसु पा- म्या शिववधु लटकाळी ॥सुण दयानिधी०॥३॥ साहेब एक मुजरो मानीजे, निज शेवक उत्तम यद दीजे; रूप कीर्ति करे तुज जीव विजे॥ सु-ण दयानिधी०॥ ॥ ॥ इति॥

स्तवन १ जुं.

सुणो शांतिजिएंद सोनागी, हुंतो थयो हुं तुं म गुण रागी; तुमे निरागी न्नगवंत, जोतां कीम मलशे तंत ॥ सुणो० ॥१॥ हुंतो क्रोध कषायनो जरीर्ड, तुंतो उपसम रसनो दरिर्ड; हुंतो अज्ञाने त्र्याचरिनं, तुंतो केवल कमला वरीनं ॥ सुणो**०** शशा हुंतो विषयारसनो आशी, तेंतो विषया कीधी निराशी; हुंतो करमने न्नारे नार्यों, तेंतो अञ्च न्नार जतायों ॥ सुणोण ॥ ३ ॥ हुंतो मोह-े त्तणे वश पमीर्ड, तेंतो सघला मोहने हणीर्ड; हुंतो ज्ञव समुद्रमां खुंच्यो, तुंतो ज्ञव समुद्रथी

पहाँच्यो ॥ सुणो० ॥ ४ ॥ मारे जनम मरणनोः जोरी, तेंतो तोमयो तेहची दोरो; मारो पासो न मेले राग, तमे प्रजुजी थया वितराग ॥ सुणीए ॥५॥ सुने मायाए मुक्यो पासी, तुंतो निरबंधन अविनाशी: हुंतो समिकतथी अधुरो, तुंतो स-कल पदारथे पुरो ॥ सुणो०॥ ६॥ मारे ठो प्रज्ञ तुंही एक, तारे मुज सरिखा अनेक; हुंतो मनथी न मुकुं मान, तुंतो मान रहित जगवान ॥ सुणो० ॥ ७ ॥ मारुं कीधुं कशु निव याय, तुंतो रंकने करे राय; एक करो मुज महेरवानी, मारो मुजरो लेजो मानी ॥ सुनो० ॥ ७ ॥ एक-वार जो नजरे निरखों, तो करो मुजने तुंम सरिखो: जो सेवक तम सरिखो थांदो, तो गुण तमारा गाहो ।। सुणोण ॥ ए ॥ जनोजन तुम चरणनी सेवा, हुंतो मायुं प्रमु देवाधि देवा; सामु जुर्नने सेवक जाणी; एवी उदयरत्ननी वा-गी॥ सुणो०॥ १०॥ इति

स्तवन ३ जुं.

शांतिजिनेश्वर साचो साहिव ॥ शांति करण अनुकुलमे हो जिनजी ।। तुं मेरा सनमें, तुं मेरा दिलमें ॥ ध्यान धरुं पल पलमां साहेबजी ॥ तुं मेरा० ॥ जनमां जमतां में दरिशन पायो, आ-ह्या पुरो एक पलमें हो जिनजी ॥ तुं मेरा०॥ २॥ निरमल ज्योत वदनपर सोहे ॥ नीकस्यो जीम चंद वादलमें हो जिनजी ॥ तुं मेरा ।। ३॥ मेरो मन तुम साथे लीनो ॥ मीन वसे ज्युं जळ में साहेबजी ॥ तुं मेरा० ॥ ४॥ जिनरंग कहे प्रजु शांति जिनेश्वर ॥ दीवोजी देव सकलमें हो जिनजी ॥ तुं मेरा० ॥ य ॥ इति ॥

(56)

स्तवन ४ धुं.

इहो-वे कर जोमी विनष्टं, सुण जिनवर श्री शांत ॥ पाप खमावुं आपणां, जे कीथां एकांत ॥ ढाख-एकांत कटुं छुणां स्वामि॥ हुंतो चरण तु-मारा पामी॥ मुजमांहे कपट व बहोळो ॥ ते सुणतां मन थाये दोलो परिविद्य प्रगट में की-धां ॥ कुमां आळ में परने दीयां ॥ तेथी ठोमावो मुज तात ॥ शांतिनाय सुर्णे मोरी वात ॥ १ ॥ **डहो∙-नव अनंत नमो आवीयो, चरण तुमारे देव** ॥ जेम राख्यो पारवको, तेम राखो मुज हेव ॥ रास-हवे एकेंड्री आदिक जीव ॥ दुइव्या कर-ता श्रित रीव ॥ तस लाख चाराशी जेद ॥ राग देष पमाङ्या खेद ॥ मृया वोलंतां नावि लाज॥तो केम सरहो थातम काज॥ चोरी इए जब परजद कीषी॥ पर रमणीशुं जहीज हीषी ॥ २ ॥

महेर करी टालो महाराजजी, जन्म मरणना फेरा हो जीनजी ॥ अब हुं शरणे आव्यो ॥ १॥ गरजावासतणां दुःख मोटां, उंधे मस्तक रही-यो ॥ मल मुतर मांहे लपटाणो, एवां दुःख में सहीयां हो जिनजी॥ अव०॥१॥ नर्क निगोद मां जपनयो ने चिवयो, सूक्ष्म बादर थइडी ॥ ्रवेंधाणो सूइने अप्र जागे, मान तिहां कीहां र-ही हो जिनजी ॥ अव० ॥३॥ नर्क तणी अति वेदना जल्लसी, सही ते जीवे वहु ॥ परमाधामीने वंश पनीर्न, ते जाणो तमे सहु हो जिनजी ॥ अ व० ॥ श। तिर्यचतणा ज्ञव की धा घणेरा, विवेक नहीं लगार ॥ निशदिननो व्यवहार न जाएयो, केम उतराये पार हो जनजी ॥ श्रव० ॥ थ॥ देवं ताणी गति पुन्ये हुं पाम्यो, विषयारसमां जीनो भ वृत पच्काण उदय निव आव्यां, तान मान ांहे लीनो हो जीनजी ॥ श्रवण ॥ ६ ॥ मनुष्य जन्मने धर्म सामधी, पाम्यो छुं वहु पुन्ये ॥ राग देप मांहे वहु जळी , न टळी ममता बुध हो जिनजी ॥ श्रवण ॥ ९॥ एक कंचनने वीजी का-मिनी, ते शुं मनमुं बांध्युं, तेना जोग क्षेत्राने हुं गूरो, केम करी जिनधर्म साधुं हो जिनजी ॥

अवण ॥णा सननी झोम कीधी अति जाजी, हुं

वं कोक जम जेहवो ॥ कली कली कल्प में ज-

नम ग्रमायो, पुनरिष पुनरिष जेहेवो हो जिन्नि नजी ॥ श्रवण ॥ श्रा उपदेशमां हुं नयी निन्नो, नावि सद्हेणा स्वामि ॥ हवे वनाइ जोइए तिमरी, खिजमत मांहे ठे खामी हो जिनजी वि प्रा ॥ श्रा जारण । श्रा चारण । श्रा प्रतिमांहे रमत्रमीश्रो, तोप । श्रियां काज ॥ रिखन्न कहे तारो मेवकने, बांनी जानी खाज हो जीनजी ॥ श्रवण ॥ १०॥

यां फेरो टाळ ॥ जिन मुख जोवाने ॥५॥

॥ जिनराजनुं स्तवन ॥

जिनराज इमारा दीठा, में खोचन कीधा पाव ना ॥ प्रजु दर्शनसें पाप मिटत है, पुण्यतणो बंध श्राय; रोग सोक न आधि, जपाधि, सर्व संकट मीट जायरे ॥ जि०॥ १ ॥ अष्टमहा सिद्धि नव-निधी प्रगटे, जपतां श्री जिनराजः नाग्य उदय प्रगटाववारे, जपो सदा जिनराज रे ॥जि० ॥३॥ अष्ट करम दल खनगंजी लम, मस्मज करवा का-जः ध्यान अनळ सम प्रजुजी करुं, धरो सदा न्नविराजरे ॥ जि० ॥३॥ जैन धरम हितेच्छ मंम ळी, जो सुख संपत्ति चाहाय; तो प्रजुजीना इर् शन जापने, ध्यान करो चित्त ठायरे ॥जि०॥४॥ ॥ श्री महावीर स्वामीनुं स्तवन ॥

वीरजी सुणो एक विनती मोरी, वात विचा-

रो तमे धणी रे ॥ वीर मने तारो, महावीर मने तारो ॥ जनजल पार जतारोने रे॥ ए श्राकणी॥ परीच्रमण में अनंता रे कीधा, इजुए ना आव्यो वेमलो रे ॥ तुमे तो यया प्रज्ञु सिद्ध निरंजन, हमे तो छनंता जब जम्यारे ॥ बीर० ॥ रा॥ तुमे हमे वार अनंती नेळा, रमीआ संसारीपणे रे॥ तेह श्रीत जो पुरण पाळो, तो हमने तुम सम करो रे ॥ वीर० ॥२॥ तुम सम हमने जोग ना जाणो तो कांइ थोसुं दीजीए रे ॥ जनोजन तुम चरए नी सेवा, पामी इमे घणुं रीजीए रे ॥ वीर०॥३। इंडजाळयो कहेतो रे आव्यो, गणधरपद तेह ने दीर्टर ॥ श्ररजुनमाखी जे घुर पापी. तेहरे ् जिन तमे उधयों रे॥ चीर० ॥४॥ चंदनवालाप ेश्रगदना बाकुल, पिनलाच्या तुमने प्रजुरे ॥ तेर

। तातु नीताचीरं कीधी, शिववधु साये नेट

॥ श्री धर्मनाथजीनुं स्तवनः ॥

हारे मारे धर्मजिणंदशुं लागी पूरण प्रीतजो जीवमलो ललचाणो जिनजीनी उलगेरे लोल ॥ हारे मुने थाशे कोइक समे प्रज्ञु सुप्रसन्नजो, वात खनी महारीरे सवी थाशे वगेरे लेाल ॥१॥ हारे प्रज्ञ दुरीजननो जंजेयों माहरो नाथजो, जळव शे नहीं क्यारे की घी चाकरीरे लोल ॥ हारे मारा स्वामी सरखो कोण हे डिनिया मांह्यजो, जइए रे जीम तेहने घर आशा करीरे लोल ॥ १ ॥ इारे जस सेवा सेली स्वारथनी नही सीधजो, नालीर शी करवी तेइथी गोनिमी रे लोल ॥ इारे कांइ जुहुं खाय ते मीठाइने माटेजो, कांइरे पर मारथ वीण नही प्रीतमीरे लोख ॥ ३ ॥ इांरे छं तरजामी जीवन प्राण्याधारजो, वायोरे नवी जाएयो कलियुग वायरोरे लोल ॥ इारे लायक

नायक जगतवन्नस जगवंतजो, वाहरे गुण केरो साहिव सायहरे लोख ॥ ४ ॥ इारे लागी मुजने ताहरी माया जोर जो, अलगारे रह्याथी होय उसंगलारे लोख ॥ हारे कुण जाणे अंतरगतनी विण महाराजजो, हेजेरे इसी वोलो ठांफी आं-वळारे लोख ॥५॥ हां रे तारे मुखने मटके अट-क्युं माहरं मनजो, आंखलमी अणीयासी काम णगारमीरे लोख ॥ हां रे मारां नयणां लंपट जोवे इल्एइल् तुकजो, रातेर अञ्च रुपे न रहे वारी योरे लोल ॥६॥ हार प्रजु अलगा तो पण जा-णजो परीने हजुरजो, ताह्रीरे वखीहारी हुं े बाउ पारणेरे खोल ॥ हां रे कवि रूप विबुधनो मो ंति करे घरदासजो, गिरकावी मन घाणी छ-ट श्रति पंतर सोस ॥ ३॥

दिर पधारीएरे, कृपा करी महाराज; कमलविजय पद सेवतां रे, मोह्नना वंबीत थायरे ॥जन्॥५॥ 🗵

॥ श्री अजितनाथनुं स्तवन ॥

प्रितलकी बंधाणी रे अजित जिएंदशुं, प्रजु पाखे क्रण एक मनन सुहाय जो ॥ ध्याननी ताली रे लागी नेह्छुं.जलद घटा जेम शिवसुत वा हनदाय जो प्रिष्णा १ ॥ नेह पेखो मन मारो रे प्रज्ञ अलगे रहे, तन धन मन कारणथी ए सु-ज जो।। मारे तो छाधार रे साहेब रावळो, छंत-रगत तो प्रज्ञ आगळ कहुं गुंज जो ॥ प्रिणाश। साहेब ते जगमां साचो जाणीए, सेवकनां जे से-हेजे सुधारे काज जो॥ एवे रे आचरणे केस करी रहुं, बिरुद तुमारो तारण तरण जहाज जो।। प्रिषे शश्। तारकता तुंज मांहे रे श्रवणे सांजळी, ते न्नणो हुं आब्यो हुं दीन दयाळ जो ॥ तुंज करु-

ानी लेहेरे रे कारज सरे, शुं घणुं कहीए जाण धागळ कृपाळ जो ॥ प्रि॰ ॥॥ करुणादिक की धी रे शेवक जपरे, तव त्रय नावठ न्नागी निक प्रसन्न जो ॥ मनवंठीत फळीया रे जिन आखंव-ने, करजोफीने मोहन कहे मन रंग जो ॥ प्रतल मी बंधाणी रे अजित जिणंदशुं॥ ५॥

॥ स्तवन ॥

कर्षी जंमो संसारमां रे, जेम कपीला नार॥ दान न दीधुं सुनिराजने रे, श्रेणिकने दरवार॥ कर्षी०॥१॥ कर्षी ज्ञास्त्र न सांज्ञळे रे. तीणे न पामे धर्म ॥ धर्म विना पशु प्राणीति रे ॥ तंमे नहीं कुकर्म ॥ कर्षी०॥१॥ दाननणा श्रंतराय भीरे. ज्ञाननणो परिणाम ॥ नवी पामे जपदेश-रे, लोक न ले नस नाण् ॥ कर्षी०॥ ३॥

हाणना धनि सांतर्ला रे, नावे घर छाण्यासा

न्याय हो; दीधा विना निह बुटशों, करो क्रोम जपाय हो. ॥ प्यारोण ॥ ए ॥ दायक नाम धरा-ववा, तो आपो मुज एक हो; जिक्त मुक्ति पद आपीने, साहेब राखो टेक हो. ॥ प्यारोण ॥ए॥ जवोजन आणा ताहरी, आराधिक थाउं जेम हो; विजयधर्म सुरि रायनो शिष्य रत्न कहे एम प्यारो. हो ॥ गुजरातण ॥ १०॥

॥ नाग ४ थो॥

ा थोयोनो समुदाय ॥

॥ श्री संवेश्वरपार्श्वजिननी॥

संखेश्वर पासजी पुजीए, नरजवनो खाहो छी जीए ॥ मनवंछित पुरण सुरतरु, जय वामा सुत श्रवंबेसरु ॥ १ ॥ दोय राता जिनवर श्रित ज्ञखा, देाय घोळा जिनवर ग्रण नीखा ॥ दोय खीखा दो य सामस कहा, सोले जिन कंचनवर्ण लहा।। श्रामम ते जिनवरे जाखीर्ड, गणधर ते हड़के राखीर्ड ॥ तेहनो रस जेणे चाखीर्ड, ते हुवो शिव सुख साखीर्ड ॥३॥ धरणीधर राय पद्मावती, प्र ज पार्श्वतणा गुण गावती ॥ सह संघनां संकट चुरनी, नयविमलनां वंठीत पुरती ॥ ४ ॥

।। श्री पर्युपणनी ॥

सत्तरतेदी जिनपूजा रचीन, सात्र महोत्सव कीजेजी ढोल ददामा जरीने फेरी, फर्झरीनाद सुणीजेजी विरजीन खागळ जावना जावी. मा नवजव फल लीजेजी ॥ परव पजुपणं पुरव पुन्ये, खाट्यां एम जाणीजेजी ॥१॥ मास पास वळी दस्तम खुगलस, चनारी खठ कीजेजी ॥ उपर व ळी दस दोय यारीने, जिन चोवीस पुजीजेजी ॥ यस कट्यने हठ एर्जीने, वीर प्रयाण सुर्गीजेजी

॥ पमनेने दिन जन्म महोन्नव, धवल मंगल वर-तीजेजी ॥१॥ आठ दिवस खगे अमर पळावी, श्रवमनो तप कीजेजी ॥ नागकेतुनी पेरे केवल बहीए, जो शुन्न नावे रहीएजी ॥ तेखाधर दिन त्रण कख्याणक, गणधर वाद वदीजेजी ॥ पास ने मीसर श्रंतर त्रीजे, रिखन चरित्र सुणीजेजी॥३ ॥ बारसेंसुत्र ने समाचारी, संवहरी पनीकमीए जी ॥ चैत्रप्रवानी विधिस्युं कीजे, सकल जंतुने खामीजेजी ॥ पारणाने दीन स्वामीवन्नख, कीजे अधिक वमाइजी ॥ मानविजय कहे सकल मनो रथ, पुरे देवी सिधाइजी ॥ ४ ॥

॥ सिद्धाचळनी॥

श्री शेत्रुंजो तिरथ सार, गिरिवरमां जेम मेरु जद्धार, ठाकोर रामा पार ॥ मंत्रमांही नवकार-ज जाणुं, तारामां जेम चंड्र वखाणुं, जखधर ज- समां जाणुं ॥ पंखीमां जेम उत्तम इंस, कुलमांही जेम रिखवनो वंश, नाजितणो ए खंश ॥ क्मा-वंतमां श्री खरिहंत, तपशुरामां महा मुनिवंत, शेवुंजे गया गुणवंत ॥ १ ॥

॥ श्री आदिजिननी ॥

थादि जिनवर राया, जास सोवन काया॥ मरदेवी माया, धोरी लंबन पाया ॥ जगतस्थिति निपाया, शुद्ध चारित्र पाया॥ केंवलसिरि राया,मो इनगरे सिधाया ॥१॥ सविजन सुखकारी, मोह-मिण्या निवारी, दुरगति दुःग्वज्ञारी, शोक संता-प वारी॥ श्रेणि इपक धारी. केवलानंत सुधा-री ॥ नमीए नरनारी, जेह विश्वोपकारी ॥ १॥ भगवमस्य वेता. साम जे जिन मीता ॥ कर ग गाप पर्हा, इंडचंडादि दीवा ॥ द्रादशांगी वि

ठा. गुंधनां टासे ग्वा ॥ सविजन दोष दिवा,

॥ पमवेने दिन जन्म महोहव, धवल मंगल वर-तीजेजी ॥१॥ छाठ दिवस सगे छमर पळावी, खारा को जेजी ॥ नागकेतुनी पेरे केवल बहीए, जो ग्रुन नावे रहीएजी ॥ तेखाधर दिन त्रण कल्याणक, गणधर वाद वदीजेजी ॥ पास ने मीसर छांतर त्रीजे, रिखन चरित्र सुणीजेजी॥३ ॥ बारसेंसुत्र ने समाचारी, संबन्जरी पमीकमीए जी ॥ चेत्रप्रवानी विधिस्युं कीजे, सकल जंतुने खामीजेजी ॥ पारणाने दीन स्वामीवञ्चल, कीजे अधिक वमाइजी ॥ मानविजय कहे सकल मनो रथ, पुरे देवी सिधाइजी ॥ ४ ॥

॥ सिकाचळनी॥

श्री शेत्रुंजो तिरथ सार, गिरिवरमां जेम मेरु तर, ठाकोर रामा पार ॥ मंत्रमांही नवकार-णुं, तारामां जेम चंद्र वखाणुं, जलधर ज- समां जाणुं ॥ पंखीमां जेम उत्तम इंस, कुलमां ही जेम रिखवनो वंश, नाजितणो ए खंश ॥ कमा-वंतमां श्री खरिइंत, तपशुरामां महा मुनिवंत, शेत्रुंजे गया गुणवंत ॥ १॥

॥ श्री आदिजिननी ॥

आदि जिनवर राया, जास सोवन काया। मरुदेवी माया, धोरी लंडन पाया॥ जगतस्थि निपाया, शुद्ध चारित्र पाया॥ केवलसिरि राया, क्तनगरे सिघाया ॥१॥ सविजन सुखकारी, मोह-मिथ्या निवारी, दुरगति दुःखन्नारी, शोक संता-प वारी ॥ श्रेणि क्षपक धारी, केवलानंत सुधा-री ॥ नमीए नरनारी, जेह विश्वोपकारी ॥ १॥ समवसर्ण वेठा, खागे जे जिन मीठा ॥ करे ग-ण्प पश्ठा, इंडचंडादि दीठा ॥ द्वादशांगी वि ठा, गुंथतां टाखे रिठा ॥ जविजन होय हिठा

खी पुण्ये विरा ॥ ३ ॥ सुर समिकतवंता, जेह रिद्धे महंता ॥ जेह सुजन संता, टालिये मुज चिंता ॥ जिनवर सेवंता, विष्न वारे छुरंता ॥ जिन न जत्तम थुणंता, पद्मने सुख दियंता ॥ ४ ॥

॥ १ जी ॥

पुंकरगिरि महिमा, आगममां प्रसिद्धः; [वमलाचल जेटी, लहीए अविचल रिद्ध ॥ पंचम गति पहोंच्या, मुनिवर कोमाकोमः; एणे तिरथे आवी, कर्म विपातक लोम ॥ १ ॥ ॥ श्रीमंधरस्वामीनी ॥

महाविदेहक्तेत्रमां सीमंधरस्वामी, सोनानुं सिं हासनजी ॥ रुपानुं त्यां छत्र बिराजे, रलमणीमय दीवा दीपेजी ॥ कुम कुम वरणी त्यां गहुली वि-राजे, मोतीना श्रक्षत सारजी ॥ त्यां बेठा श्री मेंधरस्वामी, बोले मधुरी वाणीजी ॥ केसर चं- न नर्यों कचोळां, कस्तुरी वरासोजी ॥ पृहेखी ए पूजा श्रमारी होजो, उगमते प्रजातेजी ॥१॥

॥ पार्श्वनाथनी ॥

पास जिएंदा वामानंदा, जब गरने फळी, सुपना देखे अर्थ विषेखे, कहे मघवा मळी; जिनवर जाया सुर हुलराया, हुआ रमणी प्रिये, नेमिराजी चित्त विराजी, विलोकित वतलीए॥१॥ अष्टापदे श्री आदि जिनवर, वीर पावापुरी वरं, वासुपुज्य चंपानयर सिद्धा, नेम रेवागिरि वहं; स मेतशिखर वीस जिनवर; मोक्त पोहोत्या मुनिवरुं; चोवीश जिनवर नित्य वंडुं, सयख संघ सुहं करुं.१ वीरः सर्व सुरासुरेंड महितो, वीरं बुधाः सं-- श्रिताः, वीरेणान्नि इतः स्वकर्मनिचयो, वीराय नित्यं नमः; वीरा त्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं, वीरस्य

गोरं तपो, वीरे श्री धृति कीर्ति कांति निचयः,

श्री वीरन्नइंदिश.॥ १॥

लावणीर्ज.

॥ अजितनाथनी ॥

श्री अजितनाथ महाराज, गरीव निवाज, जरुर जिनवरजी. (१) सेवक शीर नामी तने जचारे अरजी ॥ कर माफी मारा वांक, रजळीउं रांक, अनंता जनमें, (१) आव्यो हुं तारा शरण वळी दुख दवमें, क्रोधादीक धुकता चार, खरे खर खार, लग्या मुज केमे (१) वळी पापी मः-रो नाथ हेक हंहेके; छा मुजरो मुज नगवान, करुं गुण्गान, ध्यानमां धरजी. (१) सेवक शीर नामी तने उचारे अरजी॥१॥ में पुरण क र्यो वे पाप, सुणजो आप, कहुं करजोमी, (१) मुज सुंमामां नगवान, जुल नही थोमी; जीव हिंसा अपरंपार, करी किरतार, इवे शुं करवुं, (१) ुतुं वहु बोली, साचने शुं हरबुं; तुज खोळामां

मुज शीश, जाण जगदीश, गमे ते करजी. (१) ॥ सेवक० ॥ २ ॥ में करयां बहु कुकर्म, धर्यो नहीं धर्म, पुरण हुं पापी (१) अवळो यह तारी आण मेंज जथापी; में मुरख निंदा घणी मुनि वर तणी, करी हरखायों (१) परदारा देखी छ-बाम हुं ललचायों; किंकर कहे केशवलाल आणी ने व्हाल, पुःख तुं हरजी (१) शेवक० ॥३॥ ॥ संभवनाथनी ॥ साहिव सांत्रळोरे, संत्रव अरज अमारी, ज्ञवोज्ञव हुं जम्यों रे, ना लही सेवा तुमारी; नरक निगोदमां रे, हुं तो वहु जन जमियो, तुमविण इःख सह्यां रें, छहनीश कोधे धमधमी ।। सा० ॥१॥ इंडिय वस पड्यो रे, पाल्यां वृत निव स्से, त्रसपणुं नवी गएयुं रे, हणीत्रा यावर हुंसे; वृत चित्त नवी धर्यों रे, वीजुं साचुं न बोहुं, पा

) पनी गोठमीरे, त्यां में हइकुं खोट्युं ॥सा०॥श॥

जिन छाणशुरे, में नवी संजम पाल्युं; मधुकर

तणी परे रे, शुद्ध न आहार गवेख्यो, रसना ला लचेरे, नीरस पींक उवेख्यो ॥सा० ॥३॥ नरन्नव दोहलो रे, पामी मोह वस पनीर्ड, परस्त्री देखी नेरे, मुज मन तिहां जइ अभी है; काम न को स रयीं रे, पापे पींक में जरी है, शुद्ध बुद्ध नवी रही रे, तीणे नवी आतम तरीर्छ ॥ साण्॥४॥ बह्मी नी लालचेरे, में बहु दीनता दाखी, तोपण नवी मळीरे, मळी तो नवी रही राखी; जे जन अ-जिलखेरे, तेतो तेहची नासे, तृण सम जे गण रे, तेने रहे नित्य पासे ॥साणाए॥ धन धन ते नरारे, एइनो मोइ विद्योमी, विषय निवारीनेरे, जेने धर्ममां जोमी; अनक ते में नख्यां रे, रात्री जोजन कीधां, वृत नवी पाळीयांरे, जेह ्र वां मुळ्थी लीघां ॥ सा० ॥६॥ एम् छानंत जन ं जम्योरे, जमतां साहिब मळीयो; तुम विना

तेण दियरे, वोध रयण मुज बळीयो; संजव आ -पजोरे, चरण कमळ तुज सेवा, नय एम विनवे रे सुणजो देवाधी देवा ॥ साहिब० ॥ ७ ॥ ॥ लावणी ॥

खवर नहीं आ जुगमें पलकी, (१) सुकृत करना होय सो करले, कोण जाणे वात कलकी॥ आ दोस्ती हे जगवासकी, काया मंमलकी॥ सा-स उसास समरले साहेब, त्रायु घटे पलकी।। खबर० ॥१॥ तारा मंडल रवी चंडमा, सबहे च-लनेकी ॥ (१) दिवस चारका चमत्कार, ज्युं वि जळीयां जबकी ॥ खबरण ॥श॥ कुम कपट कर माया जोमी, कर वातां ठलकी ॥ पापकी पोटली बांधी शिरपर, केसे होय हलकी॥ खबरण ॥३॥ , ये जुग हे सूपनकी माया, जेसी बुंदां जलकी॥ ह (१) वणसतां तो वार न लागे, इनियां जाय ख-व की ॥ खबर० ॥४॥ मात तात सूत वांधव ज्ञा-ती , सव जुग मतखवकी ॥ (१) काया माया नार

हवेली, ए तेरी नहीं कवकी ॥ खबर०॥थ॥ म-न मावत तन चंचळ हस्ती, मस्ती हे वलकी ॥ (१) सद्गुरु श्रंकुश धरो शीरपर, चल मारग स-तकी ॥ खबर० ॥६॥ जव लग हंसा रहे देहमां, खुशीश्रां मंगलकी ॥ (१) हंस ठोम चल्या जव देही, मटीयां जंगलकी ॥ खबर० ॥॥ दया धर-म साहेबको समरले, ए वातां सतकी ॥ (१) राग देष उपजे नहीं जिनकु, विनित श्रखमलकी ॥ खबर० ॥ ए ॥

॥ गायन १ हुं. ॥

कानुमो शुं जाणे मोरी प्रीत—ए राह.

जरी सामुं जुर्ज श्री महावीर, हो त्रिसलाना जायारे ॥ जरी० नरकगतिनुं दुःख नाथ निवान रो, (१) जमका त्यां जाणे चीरे चीर, चीरे चन् रररररररर ॥ जरी० ॥ पशु पंखीनो जन अमने न आपो, (१) पापीका मारे ताणी तीर;ताणी त-रररररररर ॥ जरी० ॥ जबहं जोखम करे चार

शिद्वार्ड, (१) कापो क्रुकरमी कथीर; कापो क--रररररररर ॥ जरी**० ॥ प्रवळ अनळ** निवमांही बळुं ढुं प्रजु; (१) उचरुं शुं अरजी अधीर; अरजी अरररररररर ॥ जरीण॥ केवल पामी स्वामी अं तरजामी प्रजुजी (१) वसीया हो सिधसिख्वाने शिर; वसीया सररररररररर ॥ जरी० ॥ महावीर-मंमल शिवसूत केशवने, (१) छाप दयाना छांटो नीर, ठांटो ठरररररररर ॥ जरी सासूं जुर्न श्री महावीर, हो त्रिसलाना जाया ॥ ॥ ३ जुं.॥

गीरधारी रे--ए राग.

श्रादिनाथजी रे विनित करं ते स्विकारों, मुने श्राहारों वे प्रञ्ज तारों॥ रिखवजी रे विनित्ती करं ते स्विकारों, मुने श्राहारों वे प्रज्ज तारों ॥१॥ मुने मोक्त मार्ग देखाकों रे, जेथी पामीये ज्ञवनों पारों रे ॥ जिनवरजी रे कृपा करीने वतावों- मुने श्राहारों वे प्रज्ज तारों ॥ श्रादिनाथ० ॥१॥ मुन

की ग्रण गावतां, चंद गोपाखदास ॥ ५ ॥ ॥ श्री सुपारश्वनाथ जिननुं ॥ व नेखरे जतारो राजा न्नरथरी-ए रागः

तार प्रज्ञ तार मुजने. जगजीवन जगरायजी ॥ शरण आव्योरे विज ताहरे, करजोमीने आज जी ॥ अरज सुणों रे श्री सुपार्सजी ॥ ए आंक-णी॥ क्तमारे करो प्रज माहरां, आव्या वांक अ पारजी ॥ कहणानिधि करणा करी, आयो जवज ळ पारजी॥ अरजण तरण तारण जिन तुजने, नमुं वार हजारजी ॥ परम प्रज परमात्मा, मुज दुरित प्रहारजी ॥ अरज० ॥ मुक्ति आपी जिन नाथजी, सारो सेवक काजजी।। विश्वपति तुज ने नमे, मुनि माणिक छाजजी ॥ छरज सुणोरे श्री सुपासंजी ॥ ॥ श्री चंद्रप्रज्ञ जिनतुं ॥

॥ श्री चंद्रप्रज्ञ जिननु ॥ चंद्र प्रज्ञजीसें ध्यानरे, मोरी लागी लगनवा॥ चंद्र०॥ लागी लगनवा ठोमी न हुटे, जब लग घटमें प्राण रे ॥ मोरीण ॥१॥ दान शियल तप नावना नावे, जैनधरम प्रतिपाळरे ॥ मोरीण ॥ १॥ हाथ जोम कर व्यरज करत है, वंदत रोठ खुसाल रे ॥ मोरी लागी लगनवा ॥ ३ ॥

॥ श्री पार्श्वनाथनुं स्तवन ॥

रातां जेवां फूलकांने, सामल जेवो रंग ॥ आज तारी आंगीनो, कांइ रुको बन्यो रंग ॥ प्यारा पा सजी हो लाल, दिनदयाल मुने नयणे निहाल॥ ए आंकणी ॥१॥ जोगीवामे जागतोने, मातो धिंगममञ्ज्ञ ॥ शामळो सोहामणोने, जीत्या आठे मल्ल ॥ प्याराण ॥ १ ॥ तुं हे मोरो साहिबोने, हुं हुं तारो दास ॥ आश पूरो दासनी कांइ, सांज-ळी अरदास ॥ प्यारा^० ॥ देव सघळा दीठा तेमां, एक तुं व्यवहा।। लाखेणुं हे लटकुं तहारुं, देखी रीजे दिल्ला । प्यारा० ॥४॥ कोइ नमे पी रनेने, कोइ नमे राम ॥ जदयरत्न कहे रे प्रजु, रे तुमशुं काम ॥ प्यारा पासजी हो लाल, नि

त्रावतां, केवल पाम्या महाजागरे ॥ ऋपजाणी १३॥ गजवर खंधे मुक्ते गया, अंतगम केवली एहरे ॥ वंदो पुत्रने मावमी, आणी अधिक सनेह रे ॥ ऋषजाणी १४॥ ऋषजाणी जाने वरणवी, समिकत पुर मोजाररे॥ सिद्धगिरि महातम्य सां जालो, संघने जय जयकाररे ॥ ऋषजाणी १५॥ संवत अहार अंशीये, मागसर मास सोहायरे॥ दिगविजय कविरायने, मंगळ माल सवायरे॥ क्षत्रनी शोजा हुं शी कहुं ॥ १६॥

अय सुतक विचार प्रारंतः

मथम कोइने घेर जन्म थाय ते विषे.

- १ पुत्र जन्मे दीन १० नुं तथा पुत्री जन्मे दीन ११ नुं अने रात्रे जन्मे ते। दीन १२ नुं स्नुतक.
- २ बार दीवस घरना माणस देव पूजा करे नहीं.
- ३ न्यारा (जुदा) जमता होय ते वीजाना घरना पाणीथी जिनपूजा करे अने सुवावड करनारी तथा करावनारीने तो नवकार गणवो पण सुज नहीं.

अपसववाळी स्त्री मास १ सुधी जिनमितमानां दरज्ञन करे नहीं तथा दीन ४० सुधी जिनमितमानी पूजा करे नहीं अने साधुने पण वोरावे नहीं एम विचारज्ञार मकरणमां कर्षु छे.

५ घरना गोत्रीने दीन ५ तुं स्रुतक जाणवुं. ६ व्यवहार भाष्यनी मलयगीरीकृत टीका मधे जन्मबुं स्रुतक दीन १० तुं कहांं छे.

ण गाय, घोडी, उंटणी, भेस घरमा पसवे तो दीन २ नुं अने वनमां पसवे तो दीन १ नुं सुतक.

८ भेस मसवे तो दीन १५ तथा गाय पसवे तो दीन १० तथा छाली वकरी पसवे तो दीन ८ तथा उंटणी पसवे दीन १० पछी तेपनुं दुध वापरवुं कल्पे

९ दास दासी के येनो आपणेज आश्रये जन्म थाथ अने आपणी नजर आगळज रह्यां होय तो २४ पहोरनुं सूतक. जाणवुं.

ऋतुवंती स्त्री संवंधी सुतक निर्णय.

१ दीन ३ सुधी भांडादीकने जुवे नहीं. दीन चार लगी प-डिकमणादीक करे नहीं, पण तपस्या करे ते छेखे लागे. दीन ५ पछी जिन पूजा करे, रोगादिक कारणे ३ दीवस वित्या पछी पण जो स्थीर दीठामां आवे तो तेनो दोप

याळ, धुळव मंमपमां जग अजवाल्यां॥ जे जे आरती ॥ ३॥ तीसरी आरती त्रीनोवन दे-वा, सुरनर इंड करे तारी सेवा॥ जे जे छार-तीं ॥४॥ चोथी आरती चउगति चूरे, मनवं वित फल शीवसुख पूरे ॥ जे जे आरती० ॥ए॥ पांचमी आरती पून्य उपायो, मुळचंदजी रिख्व गुण गायो ॥ जे जे आरती० ॥ ६ ॥ ॥ अध मंगळदीवो ॥ दीवोरे दीवो मंगळीक दीवो, आरती जतारो ने बहुचरंजीवो; सोहामणो घेर परव दीवाळी, अजुआळी, जावे जगते विघन निवारो; दीपाल

् अमर खेले अंबळा नारी. दीपाळ जणे एने करे नणे जेने ए कळी काळे, आरती उतारी राजा क्रमारपाळे, तम घर मंगळीक अमघर मंगळीक मंगळीक चतुर विध संघने होजो; दीवोरे दीवो मंगळीक दीवो, आरती जतारोने बहु चिरंजीवो.